Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

શ્રુતસાગર | શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (MONTHLY)

April-May-2020, Volume : 06, Issue : 11-12, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

'खंभात की गजल' लेख के संदर्भ में खंभात नगर का एक प्रतिक चित्र

(रत्नमणिराव भीमराव लिखित 'खंभातनो इतिहास' से साभार)

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

पूज्य राष्ट्रसन्त श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में
श्री शीतलनाथ जैन मंदिर सेक्टर-२४, गांधीनगर में आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव की झलकियाँ

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर श्रुतसागर

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-६, अंक-११-१२, कुल अंक-७१-७२, अप्रैल-मई-२०२०

Year-6, Issue-11-12, Total Issue-71-72, April-May-2020

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖

हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖

रामप्रकाश झा

❖ संपादन निर्देशक ❖

गजेन्द्रभाई शाह

❖ संपादन सहयोगी ❖

राहुल आर. त्रिवेदी

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ जून, २०२०, वि. सं. २०७६, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-१०

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२३२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	रामप्रकाश झा	५
२.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	६
३.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	८
४.	खंभात गझल	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	१०
५.	१२ व्रत पर आधारित ३ अप्रगट कृतिओ	डॉ. शीतलबेन शाह	२८
६.	वल्कलचीरी सज्झाय	डिम्पलबेन शाह	४९
७.	ज्ञानमंदिर में प्रकाशाधीन अप्रकाशित कृति सूची	-	५३
८.	कर्मवाद, जैन कर्म साहित्य अने पंचसंग्रह	पुण्यविजयजी	५६
९.	प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि	राहुल आर. त्रिवेदी	५९
१०.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमंतकुमार	६३
११.	समाचार सार	-	६५

चतुरइ तउ च्यारि भला, मूरख भला न आठ।
चंदन की टुकडी भली, गाडउ भर्यु न काठ॥७३॥

प्रत क्र. १३१०७१

भावार्थ- चतुर लोग चार हों तो भी बहुत है, मूर्ख लोग आठ हों फिर भी किसी काम के नहीं, क्योंकि चंदन का एक टुकड़ा भी ज्यादा अच्छा है, बजाय कि बैलगाडी भरकर काष्ठ।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

रामप्रकाश झा

श्रुतसागर का अप्रैल और मई मास का संयुक्त अंक आपके करकमलों में प्रस्तुत है। विश्वव्यापी महामारी कोरोना की वजह से जो इन दो महीनों का अंक समय पर प्रकाशित नहीं हो पाया था। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्य बुद्धिसागरसूरीश्वरजी की अमृतमयी वाणी के अतिरिक्त चार अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **"गुरुवाणी"** शीर्षक के अन्तर्गत जैनदर्शन के विराट वर्तुल में इस्लाम धर्म, ख्रिस्ती धर्म, बौद्ध, वैदांत, आर्यसमाज, चार्वाक आदि की विचारधाराओं को घटित किया गया है। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक **'Awakening'** से क्रमशः संकलित किया गया है, जिसमें एक युवक के धर्म परिवर्त्तन का दृष्टान्त देते हुए उसके आन्तरिक गुणों के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्री सुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा संपादित **"खम्भातनी गजल"** का प्रकाशन किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत कवि दीपविजयजी ने खम्भात नगर के प्राचीन वैभव और संस्कृति का वर्णन किया है। द्वितीय कृति के रूप में **"१२ व्रत पर आधारित ३ अप्रगट कृतिओ"** शीर्षक के अन्तर्गत शहरशाखा पालडी में कार्यरत डॉ. शीतलबेन शाह के द्वारा श्रावक के बारह व्रतों के ऊपर तीन अप्रकाशित कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन कर प्रकाशित किया जा रहा है। तृतीय कृति के रूप में शहरशाखा, पालडी में कार्यरत श्रीमती डिम्पलबेन शाह के द्वारा सम्पादित **"वल्कलचीरी सज्झाय"** को प्रकाशित किया जा रहा है। इस कृति के कर्त्ता श्री मेरुविजयजी ने इसमें वल्कलचीरी व प्रसन्नचन्द्र राजर्षि के जीवनचरित्र का वर्णन किया है। संयुक्तांक के ज्यादा पृष्ठों की उपलब्धि होने से इसबार बडी कृतियों का समावेश हम कर सके हैं।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के अन्तर्गत पू. मुनि श्री पुण्यविजयजी लिखित **"कर्मवाद, जैन कर्म साहित्य अने पंचसंग्रह"** नामक लेख प्रकाशित किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत इस अंक में श्वेताम्बर व दिगम्बर सम्प्रदाय के विविध विद्वानों के द्वारा रचित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

गतांक से जारी **"पाण्डुलिपि संरक्षण विधि"** शीर्षक के अन्तर्गत ज्ञानमंदिर के पं. श्री राहुलभाई त्रिवेदी के द्वारा परंपरागत अपनाई हुई विधियों के ऊपर प्रकाश डाला गया है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत इस अंक में सीमा स्तंभ रूप **"श्रीपाल रास"** ग्रन्थ की समीक्षा प्रस्तुत की गई है। इस ग्रन्थ में श्रीपाल रास की गाथाओं को गुजराती, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषाओं में प्राचीन चित्रों के साथ प्रकाशित किया गया है।

हम यह आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे।

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी

जैनदृष्टिए आत्मानुं अनन्त वर्तुल

अन्तरात्मारूप ईशु ते स्वामी-सेवकभावे सिद्ध परमात्मानो पुत्र छे। अन्तरात्मारूप ईशुनी माता खरेखर विवेकबुद्धिरूप कुंवारी कन्या छे, अने ते परभाषामां भासता सत्य विचारोने परमात्माना संदेशाओ कहीने तेनो जगतमां प्रचार करवा उपदेश आपे छे। क्षपक श्रेणिरूप शूळीपर चढीने अन्तरात्मारूप ईशु तेरमा गुणस्थानकमां पोताना स्वरूपभूत सर्वज्ञ परमात्माने प्राप्त करे छे।

आवी आध्यात्मिक विचारणारूप शैलीए ईशुनां आध्यात्मिक सापेक्षदृष्टिमान्य सत्य मन्तव्योनो जैनदर्शनमां समावेश थाय छे। तेनुं ज्ञानी गुरुद्वारा विशेष प्रकारे समाधान करीने अन्तरमां निश्चय करवो अने अनेक नयोनी अपेक्षाए तेओना सत्य मन्तव्योनो जैनदर्शनमां अन्तर्भाव थाय छे ते सम्यग् रीते अवबोधवो।

आध्यात्मिक विचारणाओ स्थूलरूपे स्थूलमां प्रगटे छे अने ते स्थूलाचार धर्मनुं समष्टिरूप धारण करीने जगतमां भिन्न भिन्न धर्मो तरीके अस्तित्वने धारण करीने विश्वना इतिहासने पाने पोतानुं स्वरूप आलेखावे छे, उपर प्रमाणे आध्यात्मिक सापेक्ष विचारशैलीए मुसलमान अने ख्रिस्ति धर्मनी आध्यात्मिक सद्विचारणाओनो अने सदाचारोनो जैनदर्शनमां समावेश थवाथी जैनदर्शन खरेखर सर्वधर्मदर्शनाधिपत्यपदने प्राप्त करवाने अधिकारी बनी शके छे।

बौद्धदर्शन आत्माने पर्यायरूप एकान्ते मानीने तेने अनित्य स्वीकारे छे। जैनदर्शन, द्रव्यार्थिकनये आत्माने नित्य स्वीकारे छे अने पर्यायार्थिकनये आत्माने अनित्य स्वीकारे छे, तेथी तेना क्षणिकवादनो पर्यायार्थिकदृष्टिए जैनदर्शनमां समावेश थाय छे अने तेना विज्ञानवादनो ज्ञाननयदृष्टिए जैनदर्शनरूप आत्मामां अन्तर्भाव थाय छे। **अद्वैतवादरूप वेदान्तदर्शननो एक आत्मद्रव्यमां आत्मास्तित्वनी अपेक्षाए फक्त समावेश थाय छे।** ब्रह्मरूप आत्मा होवाथी अने ते सत्ताए सिद्ध परमात्मा होवाथी संग्रहनयनी दृष्टिए अन्य नयोना सापेक्षपणे तेनो आत्मामां अन्तर्भाव थाय छे।

रामानुज अने वल्लभाचार्यना मन्तव्योनो जीव अने अजीव ए बे तत्त्वोमां समावेश थवाथी जैनदर्शनमां ते बेनो अन्तर्भाव सापेक्षपणे करी शकाय छे। आर्यसमाजीए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मानेला जीवो, इश्वर, जगत् वगेरेनो जीव अने अजीव ए बे तत्त्वोमां समावेश करी शकाय छे, तेथी आर्यसामाजिक तत्त्व मान्यताओने पण सापेक्षपणे जैनदर्शन पोताना सापेक्षनयरूप उदरमां समावेश करी दे छे। चार्वाक अर्थात् जडवादीओनी मान्यताओ ए जैनदर्शनना उदरसमान छे। आ प्रमाणे विश्वप्रवर्तित सर्वधर्मोने सापेक्षदृष्टिए पोतानामां समावनार जैनदर्शन होवाथी जैनदर्शननुं अपरिमित सर्वव्यापक ज्ञानवर्तुल छे, एम सापेक्षनयदृष्टिए विचारतां अवबोधाय छे।

जैनधर्म, जैनदर्शन, स्याद्वाददर्शन, अनेकान्तदर्शन, वीतरागदर्शन, जैनशासन इत्यादि नामथी संबोधित आत्मधर्ममां अस्तिनास्तित्वपणे सर्वनो समावेश थवाथी सर्वधर्मोमां राजकीयधर्म तरीके विश्वव्यापकधर्मनी पदवीने धारण करनार जैनधर्म छे, एम विश्वव्यापकधर्म विचारोथी अने सदाचारोथी स्याद्वादृदृष्टिए असंख्य योगोनी अपेक्षाए अवबोधाय छे। आवा विश्वव्यापक अपरिमित ब्रह्मवर्तुलवाळा जैनदर्शननी उपयोगिता सर्व विश्व मनुष्योए आदरवा योग्य छे, एवी विश्वव्यापक गर्जनाओ करीने वदनारा महात्माओना अवतारोनी जरूर छे।

जैनदर्शननुं बाह्याभ्यन्तर स्वरूप अनवबोधनाराओ जैनदर्शननी महत्ता आंकी शकवा समर्थ थई शकता नथी। केटलाक कुलाचारे रूढिथी जैनधर्मी गणाता जैनो जैनदर्शननी सापेक्षाओ अवबोधी शकता नथी, तेथी तेओ वस्तुतः जैनधर्मनी आराधनाथी विमुख रहे छे अने तेथी तेओ आत्माना गुणोनी उत्क्रान्तिना मार्गे आत्मवीर्य स्फोरवीने स्वयं वहवा तथा अन्योने वहाववा समर्थ थइ शकता नथी। जे भव्य मनुष्यो ज्ञाननी तीक्ष्णताए अने वैराग्यनी तीक्ष्णताए मध्यस्थभावे रहीने जैनदर्शननी उपयोगिता संबंधी विचार करे छे, तेओ रागादिना नाशपूर्वक मुक्तिप्रद जैनधर्म छे एम अवबोधवा सद्गुरू कृपाथी समर्थ थइ शके छे।

एकेकनयनी अपेक्षाए एकान्तवादे उत्थित धर्मो ए व्यष्ठिरूप धर्मो छे अने सर्वनयोनी परस्पर सापेक्षता धारण करीने सर्व धर्मोने पोतानामां समावनार एवो जैनधर्म ए खरेखर विश्वव्यापक समष्टिधर्म छे। एम अपेक्षाए अवबोधाय छे।

क्रमशः

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ – ६८२-६८४

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

The teacher is like a potter and the disciple is like a pot. The potter strikes the pot with one hand to remove the unnecessary things like stones and gives support to it with the other hand. The mother beats her son only with affection in her heart. In the same manner, the teacher also acts. The matter is different in the case of a false teacher. Sensible people would keep away from false teachers. A false teacher exploits the superstitious beliefs of his disciples to fulfil his selfish ends.

Once, an educated but poor young man was in search of a wife. A rich man agreed to give his daughter to him on the condition that he should become a convert to his religion. The young man thought that religion lay in conduct and that a change of religion would not require change of conduct and that no religion would oppose right conduct. So, he gave his consent to change his religion.

The preparations for the marriage began. The bride and the bridegroom loved each other. The young man was told to take a bath; to put on washed clothes and to approach the preceptor and to receive from him (Gurumantra) the sacred hymn of enlightenment. He was told that he could enter the marriage hall only after, thus he was converted to the bride's religion. If he did so they would deem him to have been converted to the bride's religion. Then the marriage ceremonies would be arranged.

The young man did so, after wearing washed clothes he went to the place where the Saitji and the preceptor were seated. In accordance with the Saitji's suggestion conveyed through a sign, the preceptor recited into the young man's ears, the Gurumantra or the hymn of enlightenment. The hymn was short. The young man easily got it by heart.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

The young man asked the preceptor, "What benefit do I get from reciting this hymn?"

The preceptor said "You will attain heaven." The young man said "Will I really attain heaven?" The teacher said,"Dear brother! By reciting this hymn even Vaikunta can be attained." The young-man said, "Very good. Since you have taught me such a great hymn, today I will give you Delhi as Dakshina (the teacher's fee)".

The teacher said "How funny! Is Delhi your father's property?" The young man said, "Are heaven and Vaikunta your father's property to give them to me?"

The teacher was speechless. All those who were listening to this dialogue burst into a roar of laughter. The sait performed the marriage though the conversion did not take place. Who will not like to escape from the hypocrisy of such a teacher?

The Right use of Means

Man possesses five excellent means, namely, the intellect, the body, the mind, wealth and language. Human life which is difficult to reach can attain perfection and fruitfulness only if these five means are exercised in the right manner. The head or the intellect occupies the highest position in the human body because its importance is greater than that of any other part of the body. The power of the mind is called intelligence or sense. It is intelligence or sense that can distinguish good from evil. All the functions of the human body take place in accordance with its directions. It is this power that helps us to receive and to remember anything. We would have exercised our intelligence properly, if, with its help we decide to understand the messages of great men; and to study and master the shastras (the sacred books) and to give a proper aim to our life. Lord Mahavira said;

"पण्णा समिक्खए धम्मं ।।"

Janna samikkaye dhammam

The intelligence reviews the Dharma or our righteousness.

(continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खंभातनी गझल

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

अन्य दार्शनिकोनी जेम जैन दर्शनकारोए पण गझल साहित्यमां घणुं खेडाण कर्युं छे। पूर्वकालिन कविओमां कवि खेता, मुनि (यति?) कल्याणविजयजी, कवि दीपविजयजी, मुनि जसवंतसागरजी जेवा विद्वानोए तो वर्तमानकालीन कविओमां योगनिष्ठ कवि बुद्धिसागरजी, कवि नान्हालालजी, सुप्रसिद्ध नवलकथाकार मोहनलाल चुनीलाल धामी, कवि जिनचंद्रजी, विद्वद्वर्य मुनि धुरंधरविजयजी जेवा प्रसिद्ध-अप्रसिद्ध साहित्यकारोए पण विविध विषयो पर गझलो रची गझल साहित्यमां जैनोनो अमूल्य फाळो नोंधव्यो छे। जो के गझल संबंधि घणी बधी वातो आपणे आगळ वरकाणानी गझलना परिचयमां जोइ गया छीए माटे तेनी पुनरुक्ति न करता वाचकोने गझल साहित्यनो परिचय त्यां ज जोवानी भलामण करी अहीं अमे कृतिकारना परिचयथी ज लेखनी शरूवात करीशुं।

कर्ता परिचय

कवि दीपविजयजी - तेओ तपागच्छीय विजयानंदसूरिजीनी परंपराना (प्रेमविजयजीना शिष्य) रत्नविजयजीना शिष्य हता। तेमणे सोहमकुलपट्टावली रास, समुद्रबंध काव्य, ६८ आगम-नंदीश्वरद्वीप-अष्टापदनी एम ३ पूजा, सुरतनी बे, वडोदरा-खंभात-जंबूसर-उदयपुर पालनपुरनी एम ७ गझल, कावी तीर्थ वर्णन, पंचकल्याणक वधावा, माणिभद्र छंद, चर्चाबोल विचारण, प्रख्यात महावीरस्वामी हालरडुं वगेरे सेंकडो ग्रंथोनी रचना करी छे। जो के ते ग्रंथोमां के अन्यत्र क्यांक तेमना गृहस्थ जीवनना परिचयनी कोइ नोंध मळती होवानुं ध्यानमां नथी फक्त एक नोंधमां उदयपुरना महाराजा वडे तेमने कवि बहादुरनी उपाधि अपाइ होवानो उल्लेख मळे छे। वडोदराना पण राज्य कवि होवानुं जाणेल छे।

बीजी एक नोंध मुजब सोहमकुलपट्टावली रास रचवा पाछळनुं प्रयोजन वर्णवती वेळाना कवि वडे रचायेला (ढाळ छेल्ली, गा. ८ थी १६) पद्योमां कविश्रीनो अंतरंग परिचय मेळवी शकाय छे। आ पद्योमां कविए पोताना द्वारा करायेली विराधनानुं वर्णन आलेखता एक बाजु पोताना ज दुष्कृत्यथी वलोवाता हृदयनो चितार आलेख्यो छे, तो बीजी बाजु पोतानी सरळतानो पण परिचय आप्यो होवानुं कल्पी शकाय छे। बाकी तो कविनी रचनाओ उपरथी पण कविश्रीनी विद्वत्तानो, भाषाकीय ज्ञाननो तेमज कवित्वशक्तिनो परिचय मेळवी ज शकाय छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कृति परिचय

स्तंभतीर्थ, लंबावती जेवा प्राचीन नामोथी प्रसिद्ध नगरी ते ज वर्तमाननुं खंभात। प्रस्तुत कृतिमां कविए तेमना समयना खंभात शहेरनी वर्णना करी छे। अहीं कृतिनी शरूआतमां 'मां' शारदाने नमस्कार करी कविए सर्वप्रथम किल्लानुं वर्णन प्रारंभ्युं छे। त्यारपछी ते ज वर्णन प्रवाहने आगळ वधारता कविए अनुक्रमे ते नगरना राजवीनी, युवराजनी, तेमना लाव-लश्करनी तथा अन्य कारोबारी मंडळनी नामोल्लेख साथे विगतो आलेखी छे।

अहीं काव्यनी शरूआतना ९ पद्योमां राज्यसंबंधि ऐतिहासिक विगतो रजू करी कविए त्यारपछीना ७८ पद्योमां माणेकचोकथी प्रारंभी खंभातना विविध [पाडाओनी-वाडाओनी] स्थानोनी वर्णना क्रमबद्ध आलेखी छे। आ वर्णना करती वखते क्यांक कविए ते स्थानना माहात्म्यने दर्शावता त्यां रहेला उपाश्रयनी के तेमां बिराजमान साधु भगवंतनी नामोल्लेख पूर्वक वर्णना आलेखी छे, तो क्यांक वळी ते स्थानस्थ चैत्योनी नोंध पण तेनी साथे जोडी छे। क्यांक कविए ते पोळ-पाडा के वाडाना समृद्ध श्रेष्ठिनी के तेमना सुंदर आवासनी वर्णना करी छे, तो क्यांक जे-ते स्थानोमां चालती दुकानोनी नोंध आपी खंभातना व्यापारोद्योगनुं चित्रण आलेख्युं छे।

खास आ वर्णनामां जोवा मळती खरतरगच्छना संवेगी साधु प्रमोदविमलजीनी, सागरगच्छना मुनि मोतीसागरजीनी, देवसूरगच्छना पंन्यास शांतिकुशलजीनी वातो तत्कालिन साधु समाजने वर्णवती ऐतिहासिक नोंध कही शकाय। ते ज रीते जिनालय संदर्भे जोवा मळती स्तंभन पार्श्वनाथजी, विजयचिंतामणि पार्श्वनाथजी, नवपल्लव पार्श्वनाथजी, चिंतामणि पार्श्वनाथजी, जीरावला पार्श्वनाथजी, वासुपूज्य स्वामीजी, शांतिनाथजी, सुखसागर पार्श्वनाथजी, वासुपूज्यस्वामी (नालेर पाडाना), गौतमस्वामीजी, विमलनाथजी, सीमंधरजिनजी तथा पार्श्वनाथ प्रभुना चैत्योनी विगतो तथा जिनमंदिरोनी जेम जैन-जैनेतरोना पद्मावती, महालक्ष्मी दामोदरराय तथा महादेवजीना मंदिरनी विगत पण ऐतिहासिक दृष्टिए काव्यनी महत्वपूर्ण सामग्री कहेवाय।

उपरोक्त नोंध सिवायनी अन्य नोंधोमां पार्श्वचंद्रसूरिजीना पादुका प्रतिष्ठानो महोत्सव साह सहसवीर वडे करायानी, श्राविका खीमाबाइनी ज्ञानाध्ययननी, जीरावला पाडाना वासुपूज्यस्वामीना चैत्यमां रोहिणीतपनी आराधना कराती होवानी तेमज खंभातनी यादगार खाद्य सामग्री तरीके सुतरफेणीनी प्रसिद्धि होवानी विगतो पण काव्यनी विशेष नोंधवा योग्य सामग्रीओ छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आम माणेकचोकथी प्रारंभेली वर्णना माणेकचोक पासे ज पूरी करी कविए त्यारपछीना पद्योमां खंभातना नारेसर सरोवरनी तथा सरकारी बागनी वर्णना रजू करी तेनी नजीकना मोसमपुर तथा शक्करपुरनी वर्णना प्रारंभे छे। आ वर्णनामां तेमणे त्यांना चैत्योनी, त्यां वसता श्रेष्ठिनी, कार्तिकी बीजना दिने थती यात्रानी तथा विजयसेनसूरिजीना (पगलाना) स्थाननी वर्णना आलेखी प्रांते खंभात बंदरनी नजीकना समुद्रनी थंभ-शढादिथी शोभती होडीओनी, वीरजिन चैत्यनी तेमज नगरनी अढारे वर्णनी प्रजानी वर्णना रजू करी छे। अहीं गझल पूरी थता छेल्ला कळशमां पोते खंभात चोमासामां कृति रच्याना विक्रम संवत(१८५९)ने तेमज पोतानी गुरु परंपरा आलेखता कविए कृतिनुं समापन कर्युं छे।

कृति ते समयनी हिंदी भाषामां रचाई छे। गाययनी लाक्षणिकता माटे प्रयोजायेला नीकाक्, टीकाक्, दरवाजेक्, लाजेक् जेवा हलन्त 'क्' वाळा शब्दो खास ध्यान खेंचे छे। उपरांत ते समयनी जीवन शैली, समाज रचना विगेरे विशे पण महत्त्वनी माहिती आ कृतिमांथी मळी रहे छे।

प्रस्तुत कृतिनुं संपादन लालभाइ दलपतभाइ इन्स्टीट्युटनी एकमात्र नकलना आधारे थयुं छे। कृतिनुं लेखन प्रायः शुद्ध छे। प्रत नं.३१९२४ मां पत्र नं. २ थी ५ मां सचवायेली प्रस्तुत प्रतनुं लेखन सं. १८६५मां माहा सुद १४ ना थयेलु होइ कृति लखाया पछीनी नजीकना काळनी प्रत होइ (अनुस्वारोनी प्रचुरता बाद करता) भाषाकिय फेरफार होवानी शक्यता नहिवत् छे। खास तो आवी सुंदर प्रतनी नकल संपादनार्थे आपवा बद्दल लालभाइ दलपतभाइ इन्स्टीट्युटना व्यवस्थापकोनो खूब-खूब आभार ।

खंभातनी गझल

दूहो- कविजन-कल्पतरू जीसी, सारद मात अवल्ल[१]।
प्रणमि(मी) श्री**खंभात**नी, कहेस्युं नवल[२] गज्ज(ज)ल ॥१॥

स्थंभपुर सेहेंर नीकाक्[३], मानूं धरती का टीकाक्।
आगौ[४] रायजी **कल्याण**, होता बातमा से[५] जांण ॥२॥

गोला नाल से[६] साध्याक्[७], किल्ला तेतना[८] बांध्याक्।
सुंदर बार दरवाजेक्, अलकानयर के लाजेक्[९] ॥२॥

फत्ते अली हें नब्बाप[१०], बंधव बंदेली सब्बाप[११]।
तिसरा[१२] यार[१३] वली हे **खांन**, पद युवराज को मेहेरांन[१४] ॥३॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अछे[१५] झूलते गजराज, मांनुं मेघ जेसो गाज।
नव नव जात घोडे त्यांहि, शो(सो)हे सवारी के मांहिं ॥४॥

इसा[१६] सेहेंर को राजांन, नेकी राज हें गुणखांन।
हें **अंगरेज** को वी(वि)हारै[१७], **हुल्फब्** नेक हें श(स)रदार ॥५॥

हें **मोरारजी** दीवांन, माहा धर्ममूरत जांन।
दर्शन छयहुं[१८] को प्रतिपाल, राखें सेहेंर की संभाल ॥६॥

सइयद मुस्तपा मेहम्मूब, महम्मद अली मिरजां खूब।
अदालत कोठवाले[१९] कांम, जिनका न्याय जेसा रांम ॥७॥

वसंतराय मुनसी[२०] मांन, गुनीजन फारसी[२१] को जांन।
हें **देशा(सा)ई जगजीवन्न**, सबका एक हें तन मन्न ॥८॥

जसवि(वी)र साह मु(मू)लचंद भ्रात, अछ्या[२२] सेहेंर में अवदात[२३]।
नीका रायजी परताप, अक्कलबाज हें बोहौ[२४] आप ॥९॥

इसे मुसद्दी मलि(ली) सार, करते राज्य को कारभार।
इनसे श(स)रे तमाशाक्[२५], वरनुं[२६] नगर का खाशा(सा)क्[२७] ॥१०॥

सुंदर खूब **मांणकचोक**, मिलते लोक थोका-थोक[२८]।
आला[२९] थांन उद्दाराक्[३०], **विजयानंद** मनोहाराक् ॥११॥

आगौ चोकसी[३१] बहु लोक, करते वणज[३२] दमडे[३३] रोक[३४]।
करते पारसी मांहोमांहिं, ठगते लोककुं उछांहि ॥१२॥

ओबणसी आहालूराय(?), एकलवाई[३५] कही समझाय।
उंची मस्त हव्वेल्याक्[३६], सांहमा-सांहमी हें उल्याक्[३७] ॥१३॥

सहसवि(वी)र नानजी के गोख, नीके झरूखे हें जोख[३८]।
कपूरचंद साह गुनीजन खास, उनका पास हें आवास ॥१४॥

खारूएवाड की हें पोल, वामें[३९] लोक धर्मि चोल[४०]।
तरकत-बंध[४१] हें चोशाल[४२], **खरतरगच्छ** की पोशाल[४३] ॥१५॥

रेहेंते **संवेगी** के साध, **परमोदविमल** हें निरूपाध।
गनधर देव ज्युं आख्याक्[४४], करते सूत्र की वाख्याक्[४५] ॥१६॥

हरखचंद मोदी श्रद्धावंत, **अनुपचंद साह** हें गुनवंत।
झवेरचंद गणजी हें श्रोताक्, ग्रहते केहेंत ज्युं वक्ताक् ॥१७॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुनीजन श्रावक बहु धर्मीक्, चर्चा सुनत हें मर्मीक्।
देवल बार-सो[४६] छाजेक्, **थंभन पास**जी गाजेक् ॥१८॥

धननं बाजती घंटाक्, मांनुं मेघ को गडडाक्[४७]।
परता[४८] खूब हें परतक्ष[४९], जिन का जागता हें जक्ष ॥१९॥

कुसलचंद इसे नाम, अहनीस करत प्रभुगुणग्राम।
वडि(डी) पोसाल की पोसाल, करते **लाल सा.** संभाल ॥२०॥

मांणकचोक से डाहवेक्[५०], **भूयरावाड** ही आवेक्।
आगें **तीन दरवाजे**क्, उंचे प्रौढ साम्राजेक्[५१] ॥२१॥

डाहवे पास हें दरबार, उंच खूब हें आगार[५२]।
आगौ हाट दंताराक्[५३], जिन का पंथ हें न्याराक् ॥२२॥

रंगे नंग हुसीआरीक्[५४], मुख से देत हें गारीक्[५५]।
शरिआ[५६] खूब **मोतीचंद**, मांणस बडा हें बाजंद[५७] ॥२३॥

मिरधा[५८] पास हें **दयारांम**, कासिद[५९] वारिया[६०] को ठांम।
उहां मिलत विद्देसीक्[६१], कागद पत्र संदेसीक् ॥२४॥

चोलावाड में वी(वि)शाल, **पासचंदसूर** की पोशाल।
दोसी वांणीयौ के हाट[६२], बेंठे करत हें बहो[६३] ठाठ ॥२५॥

चोलावाड छोटे मांहें, गुनीजनलोक वस्ति(स्ती) त्यांहें।
वाहां एक मुसद्दि[६४] गुणधांम, **क(कु)सलचंद** इसे नाम ॥२६॥

गुजरीमांहें[६५] ज्यों हें चीज, ओबी केहेंत हुं तजवीज[६६]।
धोती किरमजी[६७] कोराक्[६८], दुपटें कसबी के[६९] लेहेंराक् ॥२७॥

मिसरू[७०] मिसझर[७१] मोहैथाक्[७२], रंगेत वस्त्र हें सोहैंथाक्[७३]।
पाघौ[७४] दोरीया[७५] बिकतेक्, दुगणा मुल(ल्ल) ही करतेक् ॥२८॥

आगौ सराफी[७६] मोजीक्[७७], नांणा परखवै[७८] चोजीक्[७९]।
श(स)क्के[८०] नव-नवे ढग्गौक्[८१], नांणावट्टी के अग्गौक्[८२] ॥२९॥

खंभाती सूरती श(स)क्काक्, परख्यादार[८३] हें पक्काक्।
पे(पै)से भाव परमांनेक्[८४], लेते लोक उन ठांनेक् ॥३०॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जमणे पास ही अवलोक, हें **बोरपीपले का चोक**।
सोमचंद जीवराज का धांम, पासै **विजयचिंतामण** स्वांम ॥३१॥

सन्मुख पोल हें एक खास, वामें[८५] दोय देवल खास।
आंबेल ओली के दिन नीत, बाला गात हें बोहो[८६] गीत ॥३२॥

लुंकागछ(च्छ) पोशालाक्, उंचा गोख हें मालाक्।
वाहां एक रेहेंत हें दरजीक्, सीवें आप[८७] की मरजीक् ॥३३॥

नवपल्लव पासजि(जी) भगवांन, उनका देहरा शुभ थांन।
पासे धर्मशाला शूभ, पासचंदसूर का वाहां थूभ[८८] ॥३४॥

मोहोछव कीय[८९] **सहसवि(वी)र साह**, थापीया **पादुका** उछाहि।
पीछौ रेहेंत गुनीजन एक, **मोती रतन** हें सुवी(वि)वेक ॥३५॥

इसी पोल ओला-ओल[९०], नीकी संघवी(वि) की पोल।
पद्मावती को **प्रासाद**, प्रभु से वंदीइं आह्लाद ॥३६॥

वाहां एक **ढुंढ**[९१] की पोसाल, उंची खूब मेडी[९२] माल।
मोतीचंद कीका साह, आगुं रहन हें उछाह ॥३७॥

नीका शागोटा पाडाक्, कीसीका नहि अन्नाडाक्[९३]।
इदल्लजी सेठ की उंचीक्, हवेली गगन से पोहोंचीक् ॥३८॥

सातौ भूम से चोसाल, **सागरगछ(च्छ)** की पोशाल।
वामें **मोतीसागर** साध, गुनि(नी)जन ग्यांन से निरूपाध[९४] ॥३९॥

वाहां मोरारजी एक भट्ट, ओ तो[९५] बडा हें नटखट्ट।
आगौ वडा था एक साह, **वजीया राजीया** उछाह ॥४०॥

वाने[९६] कीया देवल खास, **चिंतामनी** जिनपति पास।
कस्तुर साह गुनीजन नेक, ज्याकुं धर्म की बहु टेक[९७] ॥४१॥

पीछें **पोल उंडी** जांन, उहांके[९८] लोक हें मस्तांन।
दंतारव(वा)ड हें ता[९९] पास, वामें गुनीजनो को वास ॥४२॥

सुंदर श्राविका गुनधांम, **खीमीबाई** जिनको नाम।
ज्ञानावरण क्षय थें[१००] जास, कीधो ग्यांन को अभ्यास ॥४३॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छयहुं **कर्मग्रंथ** को हें ग्यांन, जीवाजीव की गति जांन।
अनुपचंद साह हें गुणपात[१०१], ओ तो **मकाती** केहेंलात ॥४४॥

इसी पोल की आग्गौक्, हें कंदोइ की जाग्गौक्[१०२]।
छू(बू)रा खांडकुं[१०३] धोईक्[१०४], सूखडी करत कंदोईक् ॥४५॥

खंभात सेहेंर की सोगात[१०५], सुत्तरफेणी नव नव भात[१०६]।
आग्गौ चीतारी[१०७] निरखेक्, देखत वारही हरखेक् ॥४६॥

बेंठे बोहोत पस्सारीक्[१०८], मिसरी शफ(क)र[१०९] सोपारीक्।
खसखस सुंठ विरीहालीक्[११०], पुडीयां[१११] देत हें वह(हे)लि(ली)क् ॥४७॥

वोहोरा हाट तम्मामांक्[११२], चीजां देत अम्मामांक्[११३]।
गंठीछोड[११४] वाहां केतेक्[११५], लांठ्या[११६] हरांमी तेतेक्[११७] ॥४८॥

भंगी भंग से[११८] मातेक्, केफी केफ से रातेक्।
बेंठे तंबोली झाकेक्[११९], बीडे देत हें ताजा(जे)क् ॥४९॥

नागरवेल गंगेरीक्[१२०], चेवली[१२१] पांन चंगेरीक्[१२२]।
[वाहां] बाजार जमणे पास, **पाडा जीरावला** हें खास ॥५०॥

पेहेलो **बौहें(बोहों)चरा**[१२३] को थान, करते लोक बहु सन्मान।
देवसुरगछ(च्छ) की पोसाल, ऊंची खूब मेडी माल ॥५१॥

शांतिकुशल हें पंन्यास, करते ग्यांन को अभ्यास।
झवेरी सरूप सा. हें पास, ओबी[१२४] आदमी हें खास ॥५२॥

वासुपूज्यजी माहाराज, देवल एक हें साम्राज।
दिन जब **रोहिणी**[१२५] का आय, कीरी(किरि)या करत हें उन ठाय ॥५३॥

जीरावली पास का प्रासाद, देखत होत हें आह्लाद।
पासे साध **चंदरभांण**, गुणीजन साध हे गुणजांन ॥५४॥

पीछी छोटी खडकी एक, ओ हें दरवजे के नेक[१२६]।
चीतारी दरवजे के बार, फडीए[१२७] करत हें व्यापार ॥५५॥

कण[१२८] की पीठ[१२९] हें पासैक(क्), कण की बहोत हें रासैक्[१३०]।
मांडवी पोल हें अग्गौक्, मंडी दांण[१३१] की जग्गौक् ॥५६॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छापत[१३२] करत हें दांणीक्[१३३], दुसरी देत सेहेंनांणीक्[१३४]।
धारीयावाड आली पाड, वामें पीपले का झाड ॥५७॥

शांती(ति)नाथ को **प्रासाद**, मंडे व्योम से संवाद।
लखमि(मी)चंद मंगल-नंद, **भाइ(ई)चंद पानाचंद** ॥५८॥

परतापरायजी को धांम, उंचो खूब हें अतमांम[१३५]।
मिरज्यां खूब **[म]हम्मद वे(बे)ग**, गुनीजन आदमी हें नेग[१३६] ॥५९॥

आगुं पीठ का हें राह, वस्ति(स्ती) बहोत हें अथ्थाह[१३७]।
उहांसे आ(ओ?)लीमें जावेक्, दुसरी पीठ ही आवेक् ॥६०॥

अ(आ)गौ **गवारे का चोक**, मिलते लोक थोका-थोक।
हवेली खूब मतवालीक्, **लाला मीयां** की भालीक् ॥६१॥

आगौ **धना** था एक ठार, उनकी पोल हें वी(वि)स्तार।
देव की पोल हें एक कोर[१३८], वाहां रहें वाडवौ के गोर ॥६२॥

सांमलदास की दुक्कान, पैसे बहोत को हें मांन।
गवारे दरवजे के नेक, चोकी बडी में हें जत एक ॥६३॥

पीछें उंची सेरीमांहें, बखसी रेहें[त हें] उछाह।
"चकलारणां" इसो नांम, बोली कहत हें सब गांम ॥६४॥

कासी प्रांत हूंडी[१३९] जास, **नागजी प्रागजी** हें व्यास।
दू(दु)सरा वली **रेवादास**, लखमीपात्र हें उल्लास ॥६५॥

पासै **कपासी** हें **वाड**, वाहां दोय लींब के हें झाड।
एक **माहादेव** को **प्रासाद**, घननं बजे घंटानाद ॥६६॥

हि(हें) **मोरारजी** का गेह, सांहमी पोल में हें तेह।
वाघडा पोल की वस्तीक्, उहांके लोक हें मस्तीक् ॥६७॥

आगौ **भाटवाडें** भाट, करते कसुंबी[१४०] के ठाठ।
आग्गौ **नागरवाडें** आय, डाहवी[१४१] पोल में जब जाय ॥६८॥

गुलाबचंद साह इसे नांम, उनकी खु(खू)ब मेडी धांम।
रंगत खूब हें जन्नाल[१४२], मंडप चोक हें चोशाल ॥६९॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हरखा साह जिन को नांम, जिमणी पोल में हें ठांम।
ओबी बडा हें साहुकार, जिनका खूब हें आगार ॥७०॥

हरीगोविंद आत्मारांम, अछ्या सू(सु)नाता[१४३] हें नांम।
अंचलगच्छ दो पोशाल, सांहमा-सांहमी(मा) हें तस माल ॥७१॥

हरखा प्रताप इसो नांम, ओबी रेहेंत हें उन ठांम।
नीका **नालेरा**[१४४] हें **वाड**, वामें खेजडे[१४५] का झाड ॥७२॥

वासुपूज्य हें स्वांमीक्, वे हें मुगत के गांमीक्।
पीछें दोय देवल खाश(स), जिनपति **सुक्खसागर पास** ॥७३॥

ओलुं ओलमें अभी(भि)रांम, हें माहाराज **गौतमस्वांम**।
वाहां **माहालछमी** को थांन, आलम[१४६] करत हें सन्मांन ॥७४॥

दांमोदारराय नांमे देव, वैष्णव करत हें बहो सेव।
आगौ **चोकसी की पोल**, उहांके लोक [झाक]मझोल[१४७] ॥७५॥

अमीचंद चोकसी के नेक, प्रभू(भु) को भुवन सुंदर एक।
कुशलचंद इसो नांम, हें गुनीलोक को विश्राम ॥७६॥

जिनकुं धर्म का उल्लास, इनकुं बहोत हें स्याबास[१४८]।
श्रीजिनधर्म को मंडांण[१४९], श्रीवंत पुन्ये(न्य)शाली जांण ॥७७॥

उनकी **खीमबाइ** मात, जिनकुं धर्म को अवदात।
पेहेंला **परीख** आगौ त्यांहिं, जिनकुं कपट नहीं दिलमांहिं ॥७८॥

उनका पुत्र **प्रेमा साह**, गुनि(नी)जन गुनी का गुनग्राह।
वाहां एक **विमल** जिन का धांम, अहनिश[१५०] करत प्रभू(भु)गुणग्रांम ॥७९॥

केते लोक वाहां शर्मिक्[१५१], केते लोक वाहां भर्मिक्[१५२]।
[केते लोक वाहां कर्मिक्,] केते लोक वाहां धर्मिक् ॥८०॥

अब **मनिआरवाडे** मांहें, बहोतर[१५३] लोक वस्ति(स्ती) त्यांहें।
हनुमान पोल हें ता पास, वामें भ्रामणो[१५४] का वास ॥८१॥

आगौ **खोजबले का चोक**, वा[हां] बोहो रेहेंत कुलबी[१५५] लोक।
उहांसे जमणे पासे जाय, आगौ **कोलम पाडा** आय ॥८२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अ(आ)गौ रेहेंत बणीया एक, अछी छींकणी बेकतेक[१५६] ।
अल्लिंग चोक हें महम्मूब[१५७], पीछयौ **लाडवाडा** खूब ॥८३॥

अल्लिंग चोक के हें पास, **जक्षी साह** का आवास ।
मु(मू)लचंद साह लखमीचंद, जिनकुं सदा परमाणंद ॥८४॥

आगौ तीन छौटी पोल, उनकी पास ओला-ओल ।
करमचंद साह हें नीकाक्, अपनी नात का टीकाक् ॥८५॥

रतनचंद उनका भ्रात, स्यांणा आदमी सब वात ।
उनका खूब हें आवास, ओतो रेहेंत **मुनसी** पास ॥८६॥

जसवि(वी)र साह इसे नांम, उनकी हवेली अतमांम[१५८] ।
इन विध सेहेंरकुं अवलोक, फिर कर आवें(ये) मांणकचोक ॥८७॥

जल की खूब हें ज्यां लेहेंर, सरोवर वरनवुं हवे घेहेंर ।
सरोवर समुद्र जेसा जांन, **"नारेश(स)र"** नांम हे परमांन ॥८८॥

निर्मल पांनी से भरीयाक्, मांनुं सायरा[१५९] डरीयाक्[१६०] ।
वृंदा चलत हें नारीक्, पांनी भरत पां(प)नीहारीक्[१६१] ॥८९॥

झुलर-झूलरां[१६२] जातीक्, अपने रंग में मातीक्[१६३] ।
नीका बाग **सरकाराक्**[१६४], वामें गुल्ल[१६५] हज्जाराक्[१६६] ॥९०॥

चंपक जूहडी[१६७] अंबाक्, मोगर केवडा जें(जं)बाक्[१६८] ।
मरूया[१६९] मालती जाईक्, दमणा गुल्ल ने राईक्[१७०] ॥९१॥

नीका **मादले**[१७१] का बाग, वसंतौ[१७२] खेलते हें फाग[१७३] ।
बगले बागमें चारुक्, पग पग बेंठकां वारुक् ॥९२॥

मोसमपूरे के हें पास, **शक्करपुरा** बी[१७४] एक खास ।
वाहां प्रभू(भु) **पास**जी को थांन, श्री**श्री(सी)मंदिर** भगवांन ॥९३॥

जेसंघ परिख इसे नांम, अहनिस करत प्रभुगुणग्राम ।
कार्तिकी बीज को दिन आय, जात्रा मिलत हें उन ठाय ॥९४॥

नीका खु(खू)ब **बडुआ**[१७५] बाग, वाहां एक वाव हें अथ्थाह(ग) ।
तपगछनाथ को वाहां धांम, श्री**विजेसेनसूरी(रि)** नांम ॥९५॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तटणी[१७६] महीसागर सार, चढती वेल[१७७] दोनुं वार।
चढते पांणीयों के पूर, होडी आत हें ससनूर[१७८] ॥९६॥

उंचा खूब हें थंभाक्, देखत होत अच्चंभाक्[१७९]।
शढकुं[१८०] दोर हें खासाक्, खेडूत[१८१] देत हल्लेसाक् ॥९७॥

गोला नाल से छोडीक्, बंदिर[१८२] आत हें होडीक्।
फुरजें[१८३] आत हें जब माल, सबका लेत हें संभाल ॥९८॥

फुरजें दरवजे से होय, आवें **झीपटी** में[१८४] सोय।
उहां प्रभू(भु) **वीर**कुं प्रणमेव, चउटे आत हें ततखेव ॥९९॥

इन विध तमासे अवलोक, फिर कर आवें मांणक चोक।
क्षत्री वैश्य भ्रामण शूद्र, दुसरी जात हें वली क्षूद्र[१८५] ॥१००॥

इसे वरन[१८६] हें अड्ढार, पावें सेहेंर को कौ[१८७] पार।
जेंसी(सा?) लोकक्या चरन्याक्, देख्या सेहेंर ही वरन्याक्[१८८] ॥१०१॥

गुनीअन गुनीजन को दास, यों कवी(वि) **दीपविजयें** ख(खा)स।
बरन्यो सेहेंर श्रीखंभात, सुनतें होत हें सुख-स्यात ॥१०२॥

कलस

ओगणसाठ अढार (**१८५९**) सुंदर अ(आ)सो मासें,
भाखी एह गज्ज(ज)ल्ल रही खंभात चोमासें।
निसुणी गुनीजन लोक हांसी न करस्यो कोई,
वरन्यो सेहेंर खंभात अपने नजरें जोई।
मांणकचोक पोशाल में उद्यम कीनो ए सही,
श्री**प्रेमविजय** सुपसायथी **दीपविजय** अती(ति) गहगही ॥१०३॥

॥ इति श्रीखंभातायत वर्णन गज्ज(ज)ल्ल संपूर्ण ॥

॥ संवत् **१८६५** माहा मासे शुक्र(क्ल) पक्षे १४ वार से(सो)मे ल(लि)पीकृतम्

शब्दकोश

१. उत्तम, २. नवी, ३. सुंदर, ४. आगळ, ५. वातोथी, ६. तोपथी, ७. साधी शकाय, ८. ?, ९. शरमाय, १०. नवाब, ११. ?, १२. तेनो, १३. मिल, १४. ?, १५. छे,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१६. एवा, १७. घर, १८. छए, १९. कोटवाल, २०. मेताजी, २१. पारसी, २२. सारो, २३. यश, २४. घणा, २५. तमाशो=घणा लोको जोवा मळे तेवी रमत/खेल, २६. वर्णन करुं, २७. घणा, २८. घणा बधा, २९. उत्तम, ३०. उदार, ३१. सोनी, ३२. व्यापार, ३३. पैसा, ३४. रोकीने, ३५. ?, ३६. हवेली, ३७. श्रेणीओ, ३८. आनंद आपनार?, ३९. तेमां, ४०. मजीठ जेवा (पाका रंगवाळा?) ४१. ?, ४२. विशाळ, ४३. पौषधशाळा, ४४. कहेता (?), ४५. व्याख्या=विवरण, ४६. एकसो बार, ४७. गर्जारव, ४८. परचो, ४९. प्रत्यक्षपणे, ५०. डाबी बाजु, ५१. ?, ५२. घर, ५३. हाथीदांतनुं काम करनार, ५४. होशियार, ५५. गाळो, ५६.सरैया= सुगंधी, वस्तु वेंचनार, प्रसिद्ध, ५७. धूर्त, ५८. ?, ५९. खेपियो, ६०. ?, ६१. विदेशी, ६२. दुकान, ६३. घणा, ६४. मुनीम, खटपटी, ६५. बजारमां, ६६, युक्तिथी, ६७. घेरुं लाल वस्त्र, ६८. नवा(?), ६९. भरतकामवाळा, ७०. वस्त्र विशेष, ७१. वस्त्र विशेष, ७२. ?, ७३. ?, ७४. पाघडी, ७५. एक जातनुं वस्त्र, ७६. पैसा धीरनार, ७७. आनंदी, ७८. परखे=ओळखे, ७९. बुद्धिशाळी, ८०. सिक्का, ८१. ढगला, ८२. आगळ, ८३. परखनार, ८४. प्रमाणे, ८५. तेमां, ८६. घणा, ८७. पोतानी, ८८. स्तूप, ८९. कीधो=कर्यो, ९०. घणी बधी श्रेणीओ, ९१. स्थानकवासी, ९२. माळीयुं, ९३. अनाडीपणुं (?), ९४. उपाधि वगरना, ९५. ते तो, ९६. तेणे, ९७. नियम, ९८. त्यांना, ९९. तेनी, १००. थये (?), १०१. गुणपात्र, १०२. जग्या, १०३. खडी साकर, १०४. साफ करी, १०५. यादगीरी, १०६. प्रकारनी, १०७. निराकार, १०८. चित्रकार, १०९. मीसर देशनी खांड, ११०. वरीयाली, १११. पडीकी, ११२. बद्दल, ११३. अमाम=धैर्य गुमाव्या वगर, ११४. चोर, ११५. केटलाक, ११६. शठ-धूर्त, ११७. तेटला, ११८. भांगथी, ११९. घणा, १२०. एक जातनुं पान, १२१. चेवल नामना गामनुं पान, १२२. सुंदर, १२३. बहुचरादेवी, १२४. ते पण, १२५. रोहिणी नामनी तपनी आराधना, १२६. नजीक, १२७. अनाजना व्यापारी, १२८. धान, १२९. बजार, १३०. प्रमांण, १३१. कर, १३२. महोर, १३३. कर उघरावनार अधिकारी, १३४. ?, १३५. ?, १३६. इमानदार, १३७. घणी, १३८. बाजु, १३९. नाणानी आप ले करवा माटे वपराती वेपारी चीट्ठी, १४०. एक मादक पीणुं, १४१. डाबी, १४२. ?, १४३. प्रसिद्ध (?) १४४. नाळीयेर, १४५. खिजडानुं झाड, १४६. लोको, १४७. आनंदी, १४८. धन्यवाद, १४९. पाया समान, १५०. हंमेशा, १५१. शरमाळ, १५२. भ्रम राखनार, १५३. धणी, १५४. ब्राह्मण, १५५. कणबी?, १५६. वेचता, १५७. सुंदर, १५८. ?, १५९. सागर, १६०. दरीयो?, १६१. पाणी भरनार स्त्री, १६२. घणा समुदाय साथे, १६३. मस्त थयेली, १६४. “सरकार” नामनो (?), १६५. फूल, १६६. हजारो, १६७. जूई, १६८. जांबू,

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१६९. मरवो (डमरा जेवी एक पुष्पजात), १७०. राय, १७१. नाम हशे(?), १७२. वसंत ऋतुमां, १७३. होळीनो उत्सव, १७४. पण, १७५. नाम हशे?, १७६. नदी, १७७. भरती, १७८. सुंदर, १७९. आश्चर्य, १८०. सढ=वहानमां पवन माटे थांभलाने बंधातु कपडुं, १८१. नाविक, १८२. बंदर, १८३. बंदर परनुं जकात लेवानुं, वहाण ठेरववानुं मथक, १८४. स्थान नाम हशे, १८५. तुच्छ, पामर, १८६. वर्ण, १८७. कोण, १८८. वर्णव्युं.

गझल कृति सूचि - खास अमे अहीं वाचकोना अभ्यासार्थे आवी क्षेत्र संबंधि कृतिओ तथा गझलोनी एक सूचि पण प्रकाशित करी छे। जेथी वाचकोने आपणा जैन साहित्यनो आंशिक पण अद्भुत वारसो मळी शके। अनुसंधान, फार्बस गुजराती सभा, स्वाध्याय आदि संदर्भ प्रकाशनोनी नोंध पण साथे आपीये छीये।

क्रम	ग्रंथनुं नाम	कर्ता नाम	गाथा प्रमाण	आदि पद	नोंध
१	अस्त्री री गझल	जटमल	२३	सुंदर रूप गुन गाढीकि	प्रकाशित
२	आगरा की गझल	लक्ष्मीचंद	९४	सरसति मात सुभवानीक्	श्रीनगर वर्णनात्मक हिंदी पद्य संग्रह पृ.३९-४६
३	आबु शैल री गझल	पनजी सुत चेलो	६५	ब्रह्मसुता पद वीनवुं	राजस्थान में हिंदी साहित्य की खोज भाग-२
४	इन्दौर वर्णन गझल	अज्ञात	-	सकल गुणे करी सोहतो	राजस्थान में हिंदी साहित्य की खोज भाग-२
५	उज्जैन वर्णन गझल	रंगरत्न	११४	अंतिम पद-गजल उज्जैन की रंगसु रत्न गाई	मारी पासे प्रेस मेटरमां
६	उदयपुर की गझल	अमर	७९	समरु देवता सगलाक्	भारतीय विद्या अंक-४, पृ.४३०-४३५
७	उदयपुर की गझल	खेतल	७९	जपुं आदि इकलिंगजी	भारतीय विद्या वर्ष-१, अंक-४, पृ.४३०-४३५
८	उदयपुर की गझल	दीपविजय	-	-	अप्राप्य

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

९	उदयपुर की गझल	भोज	-	-	प्रेस मेटरमां मारी पासे
१०	उदयपुर वरणन गझल	जसवंतसागर	३९	समरु मात सरसति	प्रेस मेटरमां मारी पासे
११	कलकत्ता की गझल (अपूर्ण)	-	-	देखा सैहर कलकत्ताक्	प्रेस मेटरमां मारी पासे
१२	कापरडा री गझल	गुलाबविजय	31	सरस्वती पाय प्रणमुं सदा	राजस्थान में हिंदी साहित्य की खोज भाग-२
१३	कामिनी की गझल	महिमासमुद्र	४३	देखी कामिनी एक	प्रेस मेटरमां मारी पासे
१४	खंभात की गझल	दीपविजय	१०३	कविजन कल्पतरु जिसी	श्रुतसागर वर्ष-६, अंक -११-१२
१५	खेडा देव तथा धाणोरा की गझल	गोयम	-	खेडा दैवत खंतसूं	अनु.६५, विज्ञप्तिपत्र. खंड-३ पृ.२२६-२३७
१६	गिरनार (जूनागढ) नी गझल	मनरूप	-	वरणूं सब हि सोरठ ठाण	राजस्थान में हिंदी साहित्य की खोज भाग-२
१७	गिरनार की गझल	कल्याण	५२	वर दे मात वागेसरी	श्रीनगर वर्णनात्मक हिंदी पद्य संग्रह पृ. ५३-५७
१८	गुर्जर की गझल	ज्ञानविजय	१७	अहो दिलरंजन साहिबा	कोबा भंडार प्रतनं.७५०२७/१
१९	घाणेराव की गझल	मंछा राम	-	परथम नमुं श्री सुरराय	नाहटाजी लेख नं. ३०७०
२०	चित्तोड की गझल	खेतल	६३	चरण चतुर्भुज लाइ चित्त	फाबर्स गु.स. त्रै. वर्ष-५, अंक-४
२१	चित्तोडगढ की गझल	-	-	-	प्रेस मेटरमां मारी पासे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२२	जंबूसर की गझल	दीपविजय	-	-	अप्राप्य
२३	जेसलमेर की गझल	कल्याण	-	सरसत माता समरीने	शार्दुल रीसर्च इन्स्टीट्युटमां प्रत छे.
२४	जोधनगर की गझल	रत्न	-	जोध ही नगर हे एसाक्	अनु.६५, विज्ञप्तिपत्र. खंड-४ पृ.२२२-२२८
२५	जोधनगर की गझल	-	-	-	प्रेस मेटरमां मारी पासे
२६	जोधपुर नगर वर्णन गझल	हेम	४९	समरूं गणधर सारदा	राजस्थान में हिंदी साहित्य की खोज भाग-२
२७	जोधपुर नगर वर्णन गझल	अज्ञात	-	सारदा गणपति शिर नमुं	राजस्थान में हिंदी साहित्य की खोज भाग-२
२८	झिंगोर की गझल	जटमल	-	झींगोर कोटा खूब देखी नारी	नाहरानी लेख नं.?
२९	डीसा की गझल	देवहर्ष	१२०	चरणकमल गुरु लाय चित्त	स्वाध्याय, पुष्प-७, अंक-३
३०	धूलेवा ऋषभदेव की गझल	राज	२७	वचनविलास दिये ब्रह्माणि	प्रेस मेटरमां मारी पासे
३१	नागोर की गझल	मनरूप	८३	सरसती समरू सदा	श्रीनगर वर्तनात्मक हिंदी पद्य संग्रह पृ. ५८-६६
३२	नाहटो के बाग की गझल	-	-	-	अभय ग्रंथालय में प्रत
३३	नेमिजिन की गझल	तीर्थरंग	-	-	-
३४	पाटण की गझल	कस्तूरविजय/ विनयविजय	३३	प्रथम गिरा गुरुदेव नमुं	अनु.६५, विज्ञप्तिपत्र. खंड-४ पृ.१२७-१३०

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

३५	पाटण की गझल	देवहर्ष	१४५	सरस वचन द्यो सरसती	फाबर्स गु.स.त्रै. वर्ष-१९४८, एप्रिल-सप्टेम्बर
३६	पालनपुर की गझल	दीपविजय	२९	सरसति मात चित्त ध्याउंकुं(क्)	जैन साहित्यनी गझलो पृ.४४-४७
३७	पेसकपुर की गझल	अज्ञात	३०	सरसत मात की कीजीए सेवाक्	अनु.६५, विज्ञप्तिपत्र. खंड-४ पृ.२९७-३००
३८	बंगला देश की गझल	निहालचंद	६५	श्रीसदगुरु सारद प्रणमी	भारतीय विद्या वर्ष-१, अंक-४, पृ. ४२५-४२९
३९	बंगालदेश की गजल	रूपचंद	-	-	मध्यकालिन साहित्य कोश
४०	बिकानेर की गझल	खेत(लालचंद)	१७४	सारद माता समरजे	प्रेस मेटरमां मारी पासे
४१	बीकानेर की गझल	उदयचंद	११८	सारद मन समरूं सदा	श्रीनगर वर्णनात्मक हिंदी पद्य संग्रह पृ. २६-३८
४२	भावनगर की गझल	भक्ति(मान?) विजय	३३	पार्श्वनाथ प्रणमी करी	स्वाध्याय, पुष्प-६, अंक-२
४३	मणिभद्रजी री गझल (अपूर्ण)	-	-	सरसति सारदा ध्याउंकुं	प्रेस मेटरमां मारी पासे
४४	मरोट की गझल	दुर्गादास	४८	संवत सतरे पेंसठे	श्रीनगर वर्णनात्मक हिंदी पद्य संग्रह पृ. २२-२५
४५	मांगरोल की गझल	अज्ञात	-	सहु देसां सिर सेहरो	अनु.६५, विज्ञप्तिपत्र. खंड-४ पृ.१०९-११०
४६	मुंबइ की गझल (अपूर्ण)	-	-	समरुं देवी सारदा...	एल.डी.इन्स्टिट्युटमां प्रत छे.
४७	मेडता की गझल	कस्तूरविजय/ विनयविजय	५०	सारद माता समर हुं	अनु.६५, विज्ञप्तिपत्र. खंड-४ पृ.१४१-१४५
४८	मेडता की गझल	-	-	-	प्रेस मेटरमां मारी पासे

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४९	मेडता वर्णन गझल	मनरूप	४९	मरुधर देश अति मोटाक्	राजस्थान में हिंदी साहित्य की खोज भाग-२
५०	योधपुर की गझल	मनरूप	-	सुंडाला तो समरतां	अनु.५०, पृ.७६-८०
५१	योधांण की गझल	मनरूप	४९	समरुं गणपतिने सदा	अनु.६५, विज्ञप्तिपत्र. खंड-४ पृ.९६-१००
५२	राधनपुर की गझल	रिदैराम	-	सारद मात गणपति देव	अनु.५०, पृ.८३-८५
५३	लाहोर री गझल	जटमल	५६	देख्या सहिर जब लाहौर	श्रीनगर वर्णनात्मक हिंदी पद्य संग्रह पृ.१-६
५४	वटपद्र की गझल	दीपविजय	६३	सेवकने वरदायिनी	वडोदराना जिनालयो परिशिष्ट-३
५५	वरकाणा की गझल	नेतसी	७३	शारद मात मया करो	श्रुतसागर जुलाई-२०१९
५६	शेत्रुंजय री गझल	उदयचंद	४६	सारद मात की सेवाक्	प्रेस मेटरमां मारी पासे
५७	सादडी की गझल	आगमसागर	८६	सरसती मात मया करी	नाहटाजी लेख नं. ९४४
५८	सिणोर की गझल	दीपविजय			लालचंद भगवानदास लिखित लेखमां
५९	सिद्धाचलजी री गझल	कल्याण	६९	चरण नमुं चकेसरी	प्रेस मेटरमां मारी पासे
६०	सीणोर की गझल (लूटक)	हिंमतविजय	४४	अंतिम पद-पुरण होइ संघ कि आस	अनु.६५, विज्ञप्तिपत्र. खंड-४ पृ.२३७-२४०
६१	सुरत की गझल	अमर	४५	श्रीगुरुचरण नमि करी	अनु.६५, विज्ञप्तिपत्र. खंड-४ पृ.१६६-१६९
६२	सूरतनी गझल	दीपविजय	८४	श्रीगुरु प्रेम-प्रताप थें	प्राचीन मध्यकालीन साहित्य संग्रह पृ. ४१७-४२३
६३	सूरतनी गझल	दीपविजय	४३	सरसत पद प्रणमुं सदा	प्राचीन मध्यकालीन साहित्य संग्रह पृ. १३३-१३७

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

६४	सोजत की गझल	विजयदेवेंद्रसूरि शिष्य	७२	तिण भूपत रा देश में	प्रेस मेटरमां मारी पासे
६५	सोरठ वर्णन गझल	मनरूप	६३	मरुधर देश देशांमोड	राजस्थान में हिंदी साहित्य की खोज भाग-२

प्रस्तुत सूचीमांनी केटलीक कृतिओ विज्ञप्ति पत्रनी अंतर्गत रचाती गझलो छे। परंतु ते कृतिओ स्वतंत्र गझलो जेवी ज ऐतिहासिक तेमज गझल छंदमां रचाई होई अहीं संग्रहित कराइ छे।

गझल जेवी ज ऐतिहासिक सामग्री तरीके मळती अन्य सामग्रीओमां मनरूप कृत पोरबंदर नगर वर्णन, हेम कृत भावनगर वर्णन, भक्तिविजय कृत मेदिनीपुर वर्णन, अज्ञात कर्तृक पाली, मंगलोर, सांडेरा, नाणा गामनो कुंडलियो, वटपद्र नगर वर्णन विगेरे रचनाओ पण मळे छे।

❋ ♦ ❋

(पुस्तक समीक्षा : अनुसंधान पृष्ठ-६२ से)

कहें कि संपूर्ण मानवजाति के लिये उपयोगी है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। वैसे तो श्रीपाल रास में जैनधर्म-दर्शन का सार समाहित है ही, साथ ही श्री कापडियाजी ने इस प्रकाशन में जैनशासन के अनेक विधाओं को समाविष्ट कर हर प्रकार के वाचकों का पूरा-पूरा ध्यान रखा है। इस ग्रंथ का अवलोकन मात्र ही कर्मनिर्जरा का कारण बन सकता है, तथापि वांचन-मनन से तो जीव अपना मानव जीवन सफल बनाने में अवश्य सक्षम होगा।

श्री प्रेमलभाई कापडिया ने इसके अतिरिक्त देवचंद्रजी कृत चौबीसी, पंचसूत्र आदि अनेक ग्रंथों का उत्कृष्ट कलात्मक सुसंपादन कर प्रकाशित किया है। उन्होंने इन ग्रंथों को प्रकाशित कर जिनशासन के उन्नयन में अद्वितीय उपहार प्रदान किया है। प्रभु जिनेश्वरदेव से प्रार्थना है कि श्री कापडियाजी भविष्य में भी इसी प्रकार और उपयोगी ग्रंथों का संपादन एवं प्रकाशन करके समाज की सेवा करते रहें। उन्हें कोटिशः धन्यवाद...

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१२ व्रत पर आधारित ३ अप्रगट कृतिओ

डॉ. शीतलबेन शाह

चारगतिमां मात्र मनुष्यगति ज एवी छे ज्यां जीव धर्माचरण करी शके छे अने अनुक्रमे मुक्तिपदने पामी शके छे। आ मुक्तिपदने पामवा माटे परमात्माए सर्वविरतीनो धोरीमार्ग बताव्यो छे। जेमां पापोथी सर्वथा निवृत्ति होय छे। पण जे जीवो आ मार्ग उपर चालवा माटे असमर्थ छे पण धर्माचरण करवानी भावनावाळा छे तेमना माटे देशविरती धर्म पण शास्त्रोमां दर्शावेल छे। आम संपूर्ण पापोनो संपूर्ण निषेध एटले सर्वविरती अने संपूर्ण पापोनो यथाशक्य निषेध एटले देशविरती। संसारमां रहेल श्रावकने जीवन जीववा माटे जेटला पाप करवा पडे ते सिवायना अन्य पापोना पचक्खाण न करे तो ते पाप तेने सतत लाग्या ज करे छे।

जेमके आ १४ राजलोकमां घणा भोग अने उपभोगनी वस्तुओ रहेली छे। ज्यां सुधी एनुं पचक्खाण न करीए त्यां सुधी ते बधी वस्तु न वापरवा छतां तेनुं वापरवानुं पाप लाग्या ज करे छे। आवा पापोथी बचवा अने कांइक अंशे सर्वविरती तरफ आगळ वधवा माटे ज आ देशविरतीनो मार्ग परमात्माए दर्शावीने आपणा उपर करुणा करी छे। श्रावकने १२व्रतना स्वीकार द्वारा आ पापोथी बचववानो प्रयत्न करे छे। आ १२ व्रतमां प्रथम पांच अणुव्रत छे।

१. अहिंसा, २. सत्य, ३. अचौर्य, ४. ब्रह्मचर्य, ५. परिग्रह परिमाण व्रत.

आ पांच व्रतोना विकास माटे त्रण गुणव्रत छे-

६. दिशापरिमाण व्रत, ७. भोगोपभोग परिमाण व्रत, ८. अनर्थदंड विरमण व्रत.

आ व्रतोना पालनमां दृढता आवे ए माटे चार शिक्षाव्रत छे-

९. सामायिक, १०. देशावगासिक, ११. पौषध, १२. अतिथिसंविभाग व्रत.

व्रत धारण करवाथी चारित्रनो विकास तो थाय छे साथे-साथे अविरतीमां होवाथी निरर्थक आश्रवोथी बची शकाय छे अने एटला अंशे कर्मनो बंध टळे छे।

प्रस्तुत लेखमां एवा ज व्रतधारीनी टीपने दर्शावती त्रण अप्रगट कृतिओ प्रकाशित करवामां आवी रही छे। जे वर्तमानमां पण व्रत ग्रहण करवानी भावना धरावता श्रावक-श्राविकाओने खूब ज उपयोगी सिद्ध थाय तेम छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रत परिचय

१) श्रीआनंदकीर्ति कृत द्वादश स्तोत्रनी कृति आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबाथी प्राप्त थयेल प्रतनं-३०८८८ परथी संपादन करेल छे। प्रतने अंते पुष्पिका प्राप्त थती नथी। तेथी ते क्यारे अने कोना द्वारा लखाइ ए माहिती अप्राप्य छे। पण आ प्रत मध्यफुल्लिकायुक्त छे। जे मध्य-वापी खाली तथा लालरंगना गोळ चंद्रकयुक्त छे, जेथी अनुमान करी शकाय के प्रत १७मी मां लखायेल हशे। प्रस्तुत कृतिनी रचना १६८०मां थयेल छे तेथी एम कही शकाय के आ प्रत कृतिनी रचना काळना नजीकना समयमां लखाइ होवी जोइए। ४ पत्रमां लखायेल आ प्रतनी लंबाइ २६ से.मी. अने पहोळाई ११ से.मी. नी छे। एक पत्रमां १३पंक्तिओ छे अने दरेक पंक्तिमां अक्षरोनी संख्या ४४ थी ४७ छे। मध्यम दशा वाळी आ प्रतमां पार्श्वरेखा लाल रंग वाळी छे। प्रतमां अंक तथा दंड लाल स्याहीथी करेल छे। तेना चोंटेला पत्रोने छूटा पाडता तेनी स्याही क्यांक-क्यांक उखडी गयेल छे। प्रतना अक्षरो सुवाच्य छे।

२) श्रीलक्ष्मीरुचि कृत बारव्रत सज्झायनुं संपादन कार्य आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबाथी प्राप्त थयेल प्रतनं-१३०१३७ परथी करेल छे। प्रतमां प्राप्त थता ३ पेटांकमांथी प्रथम पेटांकना पत्रांक १अ-२आ पर आ कृति प्राप्त थाय छे। प्रतने अंते पुष्पिका प्राप्त थती नथी। तेथी ते क्यारे अने कोना द्वारा लखाइ ए माहिती अप्राप्य छे। पण प्रत प्रायः १९वीं सदीनी अनुमानित कही शकाय। आ प्रतनी लंबाई २२.५० से.मी. अने पहोळाई ११ से.मी. नी छे। एक पत्रमां १६ पंक्तिओ छे अने प्रति पंक्तिमां अक्षरोनी संख्या ५० छे। प्रतना अक्षर सुंदर छे। प्रतमां विशेषपाठ गेरु लालरंगथी अंकित करेल छे।

३) श्रीशुभविजय कृत बारव्रत टीपनी कृति आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर-कोबाथी प्राप्त थयेल प्रतनं-३१५५४ परथी तेनुं संपादन कार्य करेल छे। ३ पत्रमां लखायेल आ प्रतमां पण अंते कोइ पुष्पिका प्राप्त थती नथी, पण ते १८वीं सदीमां लखायेल होवानुं अनुमान करी शकाय। आ प्रतनी लंबाई २५.५० से.मी. अने पहोळाई ११ से.मी. नी छे। एक पत्रमां ११ पंक्तिओ छे अने प्रति पंक्तिमां अक्षरोनी संख्या ३८ थी ४३ छे। प्रतना अक्षर सुंदर छे। प्रतमां अक्षरमय मध्यफुल्लिका प्रतनी सुंदरतामां वधारो करे छे। लालरंगनी पार्श्वरेखा तथा अंक अने दंड पण लाल स्याहीथी करेल छे। आ प्रत पर टिप्पण पाठ पण मळे छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्ता परिचय

१) प्रतमां आ कृति माटे स्तोत्र शब्द वपरायो होवाथी अमें पण ते ज राखेल छे। द्वादशव्रत स्तोत्रना कर्ता श्रीआनंदकीर्ति छे। जे खरतरगच्छना गच्छाधिपति श्रीजिनराजसूरिना आज्ञावर्ती हता। तेओए बारव्रत उपरांत गच्छाधिपति श्रीजिनराज उपर गुरुगुण गीत पण रचेल छे। आ उपरांत अहिछत्रा-पार्श्वनाथ उपर एक स्तवन पण प्राप्त थाय छे। तेनो समय पण सं.१६८० नो प्राप्त थाय छे।

२) बारव्रत सज्झायना कर्ता श्रीलक्ष्मीरुचि छे। जे कृतिमां दर्शावेल प्रमाणे तपागच्छना श्रीविजयदानसूरिना शिष्य छे। तेमना एक शिष्य भाव नामे हता जेमणे धन्नाशालिभद्र सज्झायनी रचना करेल। ते सिवाय कर्ता विषे विशेष कोई उल्लेख मळवा पामेल नथी।

३) तृतीय कृति बारव्रत टीपना कर्ता श्रीबुद्धिविजयना शिष्य श्रीशुभविजय छे। कृतिना अंतमां आपेल विस्तृत प्रशस्तिना आधारे तपागच्छना ते वखतना गच्छनायक श्रीविजयदेवसूरि हता। तेमनी पाटे श्रीविजयसिंहसूरि हता। अने ते परंपरामां थयेल बुद्धिविजयजीना शिष्य प्रस्तुत कृतिना कर्ता छे। आ कृतिनी रचना सं.१६९९ मां कारतक सुद १३ रविवारना रोज थई छे। जेथी एवुं अनुमान करी शकाय के कर्ताश्रीनो पण काळ १७नी सदीनो उत्तरार्धना अंतिम वर्षोनो हशे। तेओश्रीनी अन्य कृतिओ प्राप्त थइ नथी।

कृतिओनो समीक्षात्मक अध्ययनसार

संपादित त्रणेय कृतिनी रचना १७मी ना उत्तरार्धना अंतमां थई छे। प्रस्तुत त्रणे कृतिओमां बारव्रत ग्रहणनी टीपनी नोंध जोवा मळे छे। एक एक व्रतमां कइ वस्तुओनो त्याग करवो अने कइ कइ वस्तुनी जयणा राखवी तेनी सुंदर समझण प्राप्त थाय छे। श्रावक के श्राविकाने व्रत ग्रहण करवा होय पण मुंझवण थती होय के जीवन जीववा माटे केटली छूट राखवी, केटलुं त्याग करवुं? वगेरेमां प्रस्तुत त्रण कृतिओ सहायक थई शके छे। श्राविका प्राणमतिए ग्रहण करेल व्रतोनी टीप श्रीशुभविजयजी द्वारा अने श्राविका अमोलाए आदरेल व्रतोनी नोंध श्रीआनंदकीर्तीजीए सुंदर रीते वर्णवी छे। श्रीलक्ष्मीरुचि कृत कृतिमां पण आ ज रीतनी नोंध छे। जो के तेमां कोइ श्रावक के श्राविकानो नामोल्लेख नथी। कृतिओमां टीपनी साथे जे-ते समयनी साधन-सामग्री आदिनो सुंदर इतिहास पण प्राप्त थाय छे। प्रस्तुत कृतिओमांथी जे-ते श्राविकाना व्रतनी विगत साथे व्रत ग्रहण करवानी भावना धरावता श्रावकोने जरूरी घणी सूचनाओ अने शिखामणो पण प्राप्त थाय छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आ त्रणेय कृतिओनी आदिमां व्रत ग्रहण करता पहेला सम्यक्त्वने ग्रहण करवानुं कह्युं छे। सम्यक्त्व ए श्रावकरुपी महान इमारतनो पायो छे। सम्यक्त्व विना कोइ पण धर्मक्रिया अचिन्त्य फल आपवा समर्थ नथी। तेथी ज त्रणेय कृतिमां सौ प्रथम सम्यक्त्व ग्रहण करवा कह्युं छे।

त्रणे कृति अंतर्गत पांचमुं-परिग्रह परिमाणव्रत अने सातमुं भोगोपभोग विरमणव्रत विशे विस्तृत छणावट करेल छे। पांचमा परिग्रह परिमाणव्रतमां जे ९ वस्तुओ-धन, धान्य, वास्तु, क्षेत्र, रुप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुष्पदनुं परिमाण करवानुं होय छे तेमां केटली छूट राखीने बाकीनानो त्याग करवो ते माटे जे छूट राखवानी होय तेनुं माप साथे दर्शावेल छे। जेमके श्रीलक्ष्मीसूरिजी अने आनंदकीर्तिजी कृत कृतिमां १०० रुपिया अने शुभविजय कृत कृतिमां १००० रुपियानी छूट कही छे। लक्ष्मीसूरिजीए तो धान्यमां घी, तेल, खांड, गोळ, मीठुं आदि बधी वस्तुनी यादी आपेल छे। कृतिओमां वास्तुमां खडकीबद्ध घरनी पण वात करी छे। वळी वस्तुओनुं वजन मापवामां ते समये वपराता मण, टांक, सेर आदिनो उल्लेख पण मळे छे। आ कृतिओमां ते समयना समाज जीवन विशे पण घणुं जाणवा मळे छे।

छट्ठाव्रत अंतर्गत दिशाओना माप दर्शाव्या छे तेमां योजन, गाउं, कोस आदि मापनो प्रयोग थयो छे।

सातमा व्रत अंतर्गत १४ नियम जे रोजे ग्रहण करवाना होय छे, तेनी विस्तृत माहिती आपेल छे। भक्ष्याभक्ष्य वस्तुओना नाम पण अहीं दर्शावेल छे जेथी ते ते समये क्या क्या पकवान, क्या क्या शाक, क्या क्या मेवा वपराता हता तेना नामो प्राप्त थाय छे। आनंदकीर्त्तिनी कृतिमां तो घरमां वपराती एक एक वस्तुनी यादी बतावेल छे जेम के एलची, अजमो, राइ, हींग, पतासा, मेथी, सूंठ, हरडा, बेरडा, जायफळ, फटकडी, खजूर, खारेक, पिस्ता, बदाम, नारियेळ, चारोळी, द्राक्ष आदि बधी वस्तुओनी केटला प्रमाणमां छूट राखी ते झीणवट पूर्वक दर्शावेल छे। जे व्रत ग्रहण करी रह्या छे तेओथी एक पण वस्तु चूकी न जवाय अने व्रतमां पाछळथी कोइ स्खलना न थाय ते माटेनी सुंदर प्रेरणा मळे छे। लगभग २७ गाथाओमां आ सातमा व्रतनुं वर्णन करेल छे। शुभविजयजीए पण पोतानी ५० गाथानी कृति अंतर्गत सातमा व्रतनुं वर्णन लगभग १५ गाथाओ द्वारा करेल छे। लक्ष्मीरुचिजीए पण पोतानी ३२ गाथाओनी कृति अंतर्गत ११ गाथामां आ सातमा व्रतनुं वर्णन करेल छे। बाकीना व्रत विषे पण घणी सुंदर यादी आपेल छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीआनंदकीर्ति कृत
द्वादशव्रत स्तोत्र

॥ढि०॥ प्रणमुं सरसति सामिणिजी, गणधर गोयम सामि।
बारहव्रत श्रावक तणाजी, समकित धरुं सुखकामि रे ॥१॥
जीवडा आदरि करि चित्त ठामि, इणि भवि परभवि जीवनइजी ।
संबल सुभ परिणामि रे ॥२॥ आंकणी।

अरिहंत देव हीयडइ धरुं जी, त्रिकरण सुद्ध त्रिकाल।
देव सहू अनतीरथी जी, हरिहर नइ क्षेत्रपाल ॥३॥ जी०...

ब्रह्मा जोगिण नइ सती जी, गोगावलि चामुंड।
देव बुद्धि सेवु नहीजी, जाणुं सहू पाखंड ॥४॥ जी०...

वंदु गुरु बुद्धिइ करी जी, मुनिवर संजम धार।
कडी कापडी जोगना जी, परिव्राजक परिवार ॥५॥ जी०...

गुरु बुद्धि मानुं नहीजी, जाव जीव थिर चित्त।
धरम केवली भाखीयउ जी, करिवुं मुझ सुख हेत ॥६॥ जी०...

धरम अन्य दरसण तणउ जी, न करुं कारण टालि।
चिंतामणि जउ करि चढीउ जी, काकर दे हूओ छालि ॥७॥ जी०...

छती सकति हुं दिनप्रतइ जी, जीमुं देव जुहारि।
गुरु पिण वांदुं जउ लहुंजी, निसुंण धरम विचार रे ॥८॥ जी०...

जाउ न जिणि दिनि देहरइ रे, कारण काइ विचारि।
एक विगयथी मोकलउ जी, अवर विगय परिहार ॥९॥ जी०...

वरस वरस प्रति देहरइ जी, द्यउ केसरि अध टंक।
अगर टंक सोपारडी जी, पचवीस निरसंक रे ॥१०॥ जी०...

पूज एक अंगलूहणउ जी, इक पहिरावण तेल(?)।
दोइ सेर आखा बलीजी, सेर एक घी तेल रे ॥११॥ जी०...

चोलपटउ इक साधुनइ जी, न्यान संबंधी तेम।
पांच टकामइं आपिवा जी, वरस प्रतइं धरि प्रेम ॥१२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

साहम्मीजी माडिवा जी, साहम्मिणि वा दोइ।
छतीस कति अधिकावली जी, अधिक धरम जगि होइ रे ॥१३॥ जी०...

॥ ढाल ॥

जी हो पहिलउ व्रत हिव आदरुं जी०, श्री गुरु आतम साखि जी०..।
जाणि करी त्रस जीवनइ जी०, नवि पीडुं चित राखि ॥१४॥
रे प्री धरम लहिओ ता सार जी०, करि उद्यम ध्रम जिन तणओ जी०.
भवजलतारणी हारे ॥१५॥ रे०..

आरंभइ जयणा अछइ जी०, थावरनओ नही नेमि जी०...।
बीजओ व्रत अंगीकरु जी०, सुक्ख लहुं बहु जेम ॥१६॥ रे प्रा०...

कन्यालीकादिक तणओ जी०, पंचकूड पचखाण जी०...।
बीजीरी जयणा करुं जी०, हिव तीजउ व्रत आणि ॥१७॥ रे प्रा०...

मोटी चोरी परिहरुं जी०, परपीडा जिणि थाय जी०...।
नान्हीरी जयणा कही जी०, जिणि परपीडा न काय ॥१८॥ रे प्रा०...

परधन लाधउं आपिसुं जी०, जाणि सुणो तसु नाम जी।
धरम काज देस उपरओ जी०, नही म्हारइ को काम ॥१९॥ रे प्रा०...

जावजीव लगि पालिसुं जी०, कायायइं करि सील।
मनवचनइ जयणा करुं जी०, जिण टलि जाअइ हील ॥२०॥ रे प्रा०...

नियम धरुं वृत पांचमइ जी०, करुं परिग्रह प्ररमाण जी०...।
रुपइयां मुझ पांचसय जी०, बीजारओ पचखाण ॥२१॥ रे प्रा०...

मुहर बीस मुझ मोकली जी०, अधिकी धरमनइ हेत जी०...।
धान तीस मण मोकलओ जी०, वरस प्रतइ थिर चेत ॥२२॥ रे प्रा०...

गोहूं चिणा चावल सहु, मूंग मसूर जुवारि जी०...।
मउठ उडद वलि बाजरी जी०, मटर कांगणी सार ॥२३॥ रे प्रा०...

वरटी सामक कोदवी जी०, चवला तूअरि तेम।
भुरट धान वलि बे करओ जी०, अधिकारओ मुझ नेम ॥२४॥ रे०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खेत तणओ पचखाण छइ जी०, रहण काज घर दोइ जी०...।
वरस प्रतइ मुझ मोकला जी०, जिहां रहतां सुख होइ ॥२५॥ रे प्रा०...

सोन.....संग्रहु जी०, तोला तीस पचास।
कांसी प्रमुख ग्रहुं सदा जी०, मण दुइ विरति प्रकास ॥२६॥

॥ ढाल चूनडी जाति ॥

दास दासी इक मोकली, तिम गायां दोइ सकेड रे।
इक भेस सकेड छइ मोकली, बीजांरी न करुं छेड रे ॥२७॥

जिन धरम जीवतइं पामीयओ, करि विरति विगति सुखकाज रे।
सुख पामइ विरती जीवडा, अनुक्रमि लहइ सिवपुर राज रे ॥२८॥ जि०...

मोकली दुइ जोडी बलनी जि०, वरस प्रतइ मोकली पांउ एक रे।
मोती अधसेर छइ मोकला, हींगलू अधसेर विवेक रे ॥२९॥ जि०...

वरस प्रतइ अधसेर छइ, केसरि बीजओ पचखाण रे।
सिंदुर पाओ सेर मोकलउं, रोली अधसेर जाण रे ॥३०॥ जी०...

--ख एक पईसा भार छइ, लाख दओढ सेर सुं मोह रे।
बीजउ काम न माहरइ, मोकलओ तिम अधमण लोह रे ॥३१॥ जि०...

हिव छठइ व्रत हुं करुं, दिसिविरति जीव हित काज रे।
तिरछा कोस मुझनइ पांचसय, जाइवओ आइवओ निज कामो रे ॥३२॥ जि०,,,

सात कोस ओचउ वली, नीचउं तिम कोस छइ च्यारे।
अधिकारओ मुझ नेम छइ, कारणि वलि अवर प्रकार रे ॥३२(३३)॥

॥ ढाल -जंबूद्वीप मझारि एहनी ॥

सातमु व्रत हिव भोगउपभोग नामक, गुरु मुखि इण परि उचरुं ए।
सचित्त मुझनइ च्यारि दिनप्रति मोकली, द्रव्य प[च]वीस ज वावरुं ए ॥३३(३४)॥

दिनप्रति विगय छइ पंच, दुइ जोडा तिम जूतीका मुझ मोकला ए।
तिम तंबोल छइ च्यारि, जोडा वस्त्रना दिनप्रति तीने निरमला ए ॥३४(३५)॥

वरस प्रतइ वेसतीस दरीयाइं तिम, गज बीजे मुझ मोकली ए।
कपडओ गज सओ दोइ दुइ ह(?)म पामडी, दुइ सकलाति छइ अतिभली ए ॥३५(३६)॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ते मटसरीया च्यार कंबल लोबडी, दोइ च्यार वरसइं ग्रहुं ए।
सीरखत लोई जाडि चउ, मुझ मोकली फूल अरध पाउ बहुं ए ॥३५(३७)॥

मांवा प्रमुख छइ च्यार जाजम हुइ ग्रहुं, दूइ सफ बीजा सहु तजुं ए।
घोडा बलद नइ ऊंट डोली सुखासना, तिम चकडोल वहिल भजुं ए ॥३७(३८)॥

गाडा प्रमुख छइ च्यारि मुझ नइ मोकला ए, बीजारी अविरति टली ए।
च्यारि विलपन स्नान चउ इक मास मइं, अणहेल बीसे भली ए ॥३८(३९)॥

चउथोवणि इक मासि दिनप्रति दस सेर, भोजन विरति सुहामणी ए।
पाणी मसक छइ च्यारि हिव हूं गुरु मुखि, विरति करुं मेवा तणी ए ।३९(४०)॥

ढालः- खडोलना जाति।

खारिक पिसता टोपरा, चारोली नीकी द्राख अखोड बिदाम चा०...
वलि खजूर रायण भली चा०, नालेर प्रमुख सकाम ॥४०(४१)॥

लेवा देवा मुझ मेवा चा०, इक मण विरति प्रमाण।
अर्ध सेर दिनप्रति ग्रहुं चा०, अधिकारओ पचखाण ॥४१(४२)॥

हिव पकवान चितारीयइ चा०, खाजा लाडू जाति ॥चा०...
गूंद जलेबी लापसी चा०, पूरी सीरा भाति ॥४२(४३)॥

सेव अंदर सासाकुली चा०, पेडा मोतीचूर।
फीणा फीणी नखचूटा चा०, खांत भूख हुइ दूर ॥४२(४४)॥

सकरपार दोठां गूंदवडा चा०, पोटली पूडा जाति।
दहोरी घेवर कीटी चा०, गूंदवडा भली जाति ॥४३(४५)॥

गूद सोपारी पींपली चा०, ए तीनेरा पाक।
दोठा एलाची दाणा चा०, रेवडी काय फल पाक ॥४४(४६)॥

मखाणा तिणि गिणि भली चा०, इंदरती सिंघोड।
मंगद कटाव दहीवडा चा०, साबूनी नीजोड ॥४५(४७)॥

...रु धाणीना दलवडा चा०, मावा हे समी सार।
कचोली तिम ..... चा०, ए पकवान विचार ॥४६(४८)॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

।। ढाल बाहिणी जाति ।।

गुड जाति मण इक खंड, अधमण तेम बूरा जाणि।
मण अध साकर मोकली, वरस प्रतइ पचखांण ॥४७(४९)॥

मोरी बहिणी विरति भली संसारि, भवजल पार उतारि।
मन वंछित दादारि ॥आंकणी।

अधमण पतासा घी मण दुइ, तेल मण इक होइ।
हिव सालणा जे छइ मोकला, ते सांभारुं जोइ ॥४८(५०)॥ मो०...

सागर करेली कयर बंट, खेलरानी जाति।
पापड वडीरी जाति सगली, चवलांरी भली भाति ॥४९(५१)॥ मो०...

सरसव चिणा वधु आभला, ए मोकला त्रिण साग।
मेथीइ जवथी ते भेलीयइ, तिणिसुं बहु मुझ राग ॥५०(५२)॥ मो०...

तिहा आंबिलि आंबला, तोरई काकडि जाति।
मोकला नींबू लूणका, आंबा लूणका भाति ॥५१(५३)॥

तोरीयावीया खेलरा ए, काकडी काचर जाति।
ए सालणा मुझ मोकला ए, न करुं बीजा ताति ॥५१(५४)॥

सूठि मुझ नइ वरत माहे, मोकली दस सेर।
पीपलि मिर्च[1] पंचत्सरसुं, अजमा तिम दस शेर ॥५१(५५)॥ मो०...

धाना कलूंची सेर दस पंच, सेर पुहकार मूल।
जीरओ किरातओ सेर पावे, विरति सदा अनुकूल ॥५२(५४)॥ मो०...

विराहली दस सेर वरसइ, मोकली मुझ जाणि दोइ।
सेर राई भली हुइ, सेर हींग प्रमाण ॥५३(५५)॥॥ मो०...

रारड फोका कायफल, तिम सेर पंच प्रमाण।
वचजाति अकल करओ भलओ, पंचकुलि जण माण ॥५४(५६)॥

हरडइ बहेडा दारु हरडइ, जाइफल जावंत्रि।
तज लुग एलाची भली, हलद्र प्रमाड कहंति ॥५५(५७)॥

1. कालामरी.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मइदा सीसा ए लीया, सुहाग पारा सार।
अभरक तमाल असालीया, तेम कसेल प्रमाण ॥५६(५८)॥

खल आधमण मुझ मोकली, दस सेर तेम कटोल।
लूणजाति अधमण मोकली, सोवा इक सेर तोल ॥५७(५९)॥

इक सेर औषधि आंखिनी, सुरमा प्रमुख जे होइ।
फिटकडी जति छइ ते वली, बीजे काम न कोइ ॥५८(६०)॥

हींडी प्रमुख जे कोकमइ, छइ सकल माटी भुंड।
मुझ एक रुपईया तणा, ग्रहिवा तजि पाखंड ॥५९(६१)॥

॥ ढाल ऋषभप्रभु जीयइ एहनी ॥

हिव आठम व्रति आदरुं ए, अनरथदंड परिहार।
चाकी हुइ मोकली ए, सिल लोढा इक धार ॥६०(६२)॥

विरति सुख संपजइ ए, टलइ अरति जंजा(ल)।
लहइ सदगति भली ए, फलइ मनोरथ माल ॥६१(६३)॥आंकणी।

उखल इक हुइ मूसलू ए, तेम चालणी च्यार।
छाजवओ मोकला ए, वट्टू हुइ चित्तधार ॥६२(६४)॥ वि०...

इडवणी चउ मोकली ए, तेम बुहारी जाणि।
टका दसरी भली ए, सूई पंचास वखाणि ॥६३(६५)॥ वि०...

दोइ तराजू डोवलणा ए, छुरी कतरणी दोइ।
हिवइ नवमइं व्रतइ ए, सामायक चित्त जोइ ॥६४(६६)॥ वि०...

मासमांहि नित हुं करुं ए, सामायक व्रत तीस।
गुण दुइ नित प्रतइं ए, नवक[का]रवाली अरीस ॥६५(६७)॥ वि०...

दिनप्रति हुं नवकारसी ए, करिसुं करि चित्त ठाम।
हिवइं दसमइ व्रतइं ए, देसावकासिक नाम ॥६६(६८)॥ वि०...

साचविसु इक नर समइं ए, बीजारओ नही नेम।
हिवइ इग्यारमइं ए, पोसह नाम सुप्रेम ॥६७(६९)॥ वि०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मासमांहि करिसुं सदा ए, पोसह व्रत इक सार।
प्रमाद तजी करी ए, जिणि लहियइ भवपार ॥६८(७०)॥ वि०...
दुइ करिसु व्रत बारमइं ए, अतिथि भणी संविभाग।
मनइं वचकायसुं ए, आणी बहुलओ राग ॥६९(७१)॥ वि०...
ए बारह व्रत पालिसुं ए, छती सकति निज काय।
वचन मननी करुं ए, जयणा जिणि सुख थाय ॥७०(७२)॥ वि०...
काल दुकालइं किणि समइ ए, काई व्रतनी हानि।
जओ थायइ तओ नही ए, मुझनइ कांई कानि ॥७१(७३)॥ वि०...
संवत सोलहसयअसी ए, जुगप्रधान जिनराज।
श्री खरतरगच्छ धणी ए, सकल सूरि सिरताज ॥७२(७४)॥ वि०...
श्री सद्गुरुनइ सय मुखइ ए, श्रावकना व्रत बार।
श्राविका अमोलां कीया भलां अइ, आदरीआ सुखकार ॥७३(७५)॥ वि०...
बारह व्रत ए पालतां ए, समकित मूल प्रधान।
आनंदकीरतिसुं सदा, दिन दिन होइ कल्याण ॥७४(७६)॥ वि०...

॥ इति श्री द्वादशव्रत परि मित्ति ॥

शुभं भूयात लेखकखकस्य ॥

लक्ष्मीरूची रचित
१२ व्रत सज्झाय

॥दि०॥ श्री जिनशासन सुंदरू ए, पणमिय श्री भगवंत।
व्रत द्वादश पभणुं भला ए, सुणिज्यो ते एकंत ॥१॥
अरिहंत देव सुगुरु नमु ए, श्री जिनभाषित धर्म तुं।
कुगुरु कुदेव कुधर्म तु ए, टालुं तेह ज मर्म तु ॥२॥
चेईवंदन इक करुं ए, वरसइ पूजा च्यार तुं।
अंगलुहणुं इक आदरुं, अक्षत सेर विचार तुं ॥३॥
छ टंका धर्म्मइ खरा ए, दीवेल इक पासेर तुं।
सूकडी पासेर मोकली ए, केसर टांक न फेर तुं ॥४॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नोकरवाली दिन प्रतइ ए, करवां दोइ पच्चक्खाण तो।
छतइ जोगि मुनि वांदवा ए, ए मुकतइं परिमाण ॥५॥

जिनभवनइं वरसइ सही ए, बार सोपारी सार तो।
दश आशातना टालवी ए, समकित एम निधार तुं ॥६॥

ढाल- वीवाहलानउ

व्रत पहिलइं हिंसा, तीम संकल थूल सीम।
बीजइ मोटकां पांच, टालु खोटानो संच ॥७॥

व्रत त्रीजइ तीम धोरी, टालुं मोटकी चोरी।
पांचसइ टंकानी सार, दाणचोरी मनि धार ॥८॥

वस्तु पडिलहु जेह, आपुं स्वामिनइ तेह।
नहितर खरचुं ए धर्म, जिम पामुं शिवशर्म ॥९॥

व्रत चउथइ सील पालुं, दोष सवे मिली टालुं।
धन धन ते नरनारी, पालइ सील विचारी ॥१०॥

सीलइ चंदनबाल, पामी पदवी विशाल।
सीलवती सती सीता, जय जगि सील वदीता ॥११॥

दूहा

सीलइ सवि सुख संपजइ, सीलइ भोग विलास।
सीलइ सिवपदवी मिलइं, पालउ सील रसाल ॥१२॥

राइमईनइ सुंदरी, सीलइ जय जयकार।
सीलइ सवि दारिद टलइं, बोलइ जगदाधार ॥१३॥

ढाल एक वरसीजी

व्रत पंचमइजी रोकड, धन शत जाणीइं।
च्यारि त्रांबा जीमहि, मूदि मनि आणीइ।
धान सउ मणजी, खडकीबद्ध धर आदरुं।
रुपा सोनाजी तोला दस वींस मनि धरुं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मनि धरुं अजब हर टांक, नव वर कूटिकां सामण भलुं।
मण पंच घी मण तेल, पंचह गुल इकमण मोकलुं ॥१४॥

खांड अधमणजी साकर ते पंच सेरडा।
मीठुं दोइ मणजी, रु मण इक मन मेरडा।
राब पीछहजी जयणाना नही केरडा।
जाति रूडीजी वीस सेर औषध केरडा।
केरबा औषध खाद्य वस्तह तीन मण सवि दाखसिउ।
दसवेस रूडा कापडां वीस तेह सुधा भाखसिउ ॥१५॥

व्रत छठइंजी चिहु दिसि जोयण मोकलुं।
सउ मुझनइ जी नीचु गाऊ इक भलुं।
ऊचुं गाऊजी सात सदा मनि आणीइ।
व्रत सत्तमजी सूधुं लेह वखाणीइं।
वखाणीइ सचित्त पंचह, द्रव्य तीस पंच सालणा।
पकवान पंच दिवस केरा, विगइ पंचह नही मणा ॥१६॥

दोइ जोडा जीवाण ही दिनप्रति मोकली।
तंबोल पासेर जी, वेस वस्त्र पंच मनि रली।
नाव पोठीजी, गाडलुं घोडो डोलडी।
विहलि उंटजजी पालखी वेसर झीलडी।
झोलडी रूडी पंच सिज्या सपरिवार सुहामणी।
दस दिवस जोयण दोइ विलेपण मासि नाहण दोइ भणी ॥१७॥

ढाल-मेघकुमार गीतनउ

अंघोलि मासइ आठ, भली भात पन्नरसे सेरह।
दिन प्रति दोइ घट वारिणा, एतलइ नही फेर।
चेतनी चेतनी जीवडा भावइ सूधु आदरे, जिम तुं तरइ संसार ॥१८॥

ज्वारि चिणा जव बाजरी, मग मठ मेथी सार।
कांग चोला तिल कोदरी, चोखा जाति स्फार ॥१९॥ चेतनि०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बरटी तूअरी झालरि, गोहुं उडद विचार।
कुलथमाल बल वेकरी, चीणो ए मनि धार ॥२०॥ चेतनि०...

आंबा केला लींबुआ, काकडी जाति उदार।
खडबूजां बीजोरडां, तांदल जुए सार ॥२१॥ चेतनि०...

आंबिली ओल कालिंगडां, ए [प]कवान विचार।
खाजां लाडु लापसी, हे समी दोठां सार ॥२२॥ चेतनि०...

दहवडी पापडी गांठीआ, घणा फीणां सेवि।
गुलधाणी तिलसांकली, भल्यो गुंद जलेबी ॥२३॥ चे०...

गुंदवडा पाक कोहलां, चिणा साकरि द्राख।
वरसोला खारिक भली, सोपारी भाख ॥२४॥ चे०...

खजूर लविंग काठी एलची, रायण गुंदह जाति।
सींघोडा पडिवा सडु, लेवी तेहनी भाति ॥२५॥ चे०...

डोडी उढवां सांगरी, खेलर कायरी जाति।
कयर कचामल पापडी कोठवडी भाति ॥२६॥ चे०...

कडा फली आंबोलिआं, सूकां सालणा एह।
व्रत सत्तम इम पालीइ, निर्मल थाइ देह रे ॥२७॥ चे०...

ढाल- माई धन्न सुपन्ननो

व्रत अट्ठमि पालउ, जांणी अनरथदंड।
चिहुं भेदे मोह्यां, पाप समस्त अखंड।
स्व हाथइं नापुं केह, नइ हु हथिआर।
दाखि न सगपण विणु, नीमह ए मनि धार ॥२८॥

सात माथा गुंथण चूह्ला दिनप्रति च्यार।
सिंधूषण धोणी मासइं पंच विचार।
खांडणनइ पीसण दलण सदामण सात।
मोटइ कामइं जयणा पर्वी नीम विख्यात ॥२९॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सेर वीसह सेकण फल मोलवा मण पंच ।
माटीनइ मरडह गुणा दोइ प्रपंच ।
वरसइ वली खारं सालणां ते मण दोइ ।
इण परिपालेसुं व्रत नुमइ हवि जोइ ॥३०॥

मासइ सामायिक करवा रूडां तीस ।
चउद नीम संभारुं पोषध आठ जगीस ।
वरसइ संविभागह जोगइ साधुनइ दोइ ।
साहमी जीमण एकासण भंगि जोइ ॥३१॥

श्रीतपगच्छ नायक नायक नर सेवंत ।
श्री विजयदानसूरीसर भगवंत ।
तस पंडित मंडण श्री लक्ष्मीरुचि सार ।
इम जपइं भवियण व्रत पाल्यइं भवपार ॥३२॥

इति श्री बारव्रत सज्झाय

शुभविजय रचित
बारव्रत टीप

दूहा

सकल जिणेसर पाय नमी, प्रणमी गोतम पाय ।
व्रत रचना साचि रचूं, सांभलतां सुख थाय ॥१॥

काल अनादिक जीवडो, भमीओ भव मझारि ।
पण जिनवाणी नवि लही, जेणिं तरिइ संसार ॥२॥

ते जिनवाणी हिवइ लही, सहगुरुनइ मुखि सार ।
बारव्रत हुं आदरुं, पालुं निरतीचार ॥३॥

॥ ढाल ॥

धुरि समकित हुं आदरुं ए, समकित धर्म्मनुं हीर तु ।
समकित विण मुगति नही ए, ईम कहइ श्रीजिनवीर तु ॥४॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अरिहंत देव सुसाधु गुरु, केवलि भाषित धर्म्म तु।
ए तिन तत्व हुं आदरुं ए, जाणी धर्म्मनुं मर्म तु ॥५॥

कुगुरु कुदेव कुधर्म्मनु ए, त्रिकण सुद्धइ परिहार तु।
धर्म बुद्धइ नवि आदरूं ए, राखुं लोक विवहार तु ॥६॥

दिनप्रतिं देव गुरुनइ नमुं ए, कारणी करुं मनि ध्यान तु।
नवकरवाली एक गुणुं, दोय पच्चक्खाणनुं मान तु ॥७॥

वरसिं निज हाथिं करी ए, जिन पूजूं दोय वार तु।
अंगलहणुं एक आलवुं ए, अवज्ञा न करुं लगार तु ॥८॥

चंदन केसर फुल फल, अगर आखा दीवेल तु।
दोय टंका नकरो करुं ए, तिम पुस्तकनु मेल तु ॥९॥

च्यार आगार छ छिडीसुं ए, समकित पालुं सुद्ध तु।
संकादिक दोष टालता ए, न करुं तिहां मति मुद्ध तु ॥१०॥

॥ ढाल-विवाहलानु ॥

व्रत पेहलुं सखि सखि, सांभलो जाणी जीव न हणिइ।
क्रम वालादिक कारणिं, आरंभनी जयणा भणी रे।
व्रत बीजइ कन्यादिक, पांच जूठां नवि भाखुं रे।
स्वजनादिकनइ कारणि, घरकाजिं जयणा राखुं रे ॥११॥

व्रत त्रिजिं हिवइ मोटकी, चोरी मइ नवि करवी रे।
खात्रादिक जेणिं करी, भूमीशनी शंका धरवी रे।
रुपीया एकावन वरसइ, दान चोरी बोली रे।
घर चोरी मुझ मोकली, पणि घणुं नवि थाउं भोलि रे ॥१२॥

भूमी पड्युं जे पामीइ, ते हुं धणी जाणी आलुं रे।
नहीतरि आधमइ राखवुं, आधुं धर्म्म ठामि भालुं रे।
व्रत चोथु हुं आदरुं, कायाइ सुद्ध पालुं रे।
मननी जयणा वचननी, सुपनादिक दोष टालुं रे ॥१३॥

पांचमुं व्रत हिवइ सांभलो, इछानुं परिमाण रे।
रोकड एकसहस्स रुपीया, दोय सहस्स मण धान मान रे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

खेती विघा पणवीस, घर खडकीबद्ध दोय रे।
जिहां रहुं हुं तिहांकणी, तिम हट्ट दोय वलि जोय रे ॥१४॥

मूंगीया सेर मइ राखवा, जवे कर अधसेर बीजुं रे।
चूना प्रमुख ते हुं कहुं, अधिक जाणी धर्म्मइ रीझु रे।
जयणा निधान नीरखीइ, जिन आज्ञा सुद्धि धरवी रे।
सातक्षेत्रइ वीत वावरुं, धर्म्मनी उन्नति करवी रे ॥१५॥

रूपुं तोला दोय शत, तोला एकशत हेम रे।
कांसा कूटमण पंच कहुं, धात बिजी मण वेम रे।
दासदासी दोय राखीइ, परीकरसुं गाडां दोय रे।
महिषी बे मुज मोकली, तिम गौ वेलासुं जोय रे ॥१५॥

पोठीया च्यार अजा एक, अवर चउपद सात राखुं रे।
घर वाखरो सघलो मलि, रुपीया सहस्सनु भाखुं रे।
पंच अनुव्रत ए कहियां, गुरु वचनिं करी जाणुं रे।
चतुरपणइ सुद्ध पालतां, हुं मनि आणिंद आणुं रे ॥१६॥

॥ ढाल-उल्लालानु ॥

व्रत छठुं हिवइ भणीइ, गुणव्रत पहिलुं ए गुणीइ।
एकेकी दिसिं राखुं, गाउं एक सहस्स हुं भाखुं ॥१७॥

उंचुं वलि कोस च्यार, अधकोस नीचूं आचार।
देवगुरु वांदवा जाउं, अधिक जाता सज्ज थाउं ॥१८॥

सातमुं भोगोपभोग, गुणव्रत बीजानुयोग।
दिनप्रतिं पंच सचित्त, च्यालिस द्रव्य अचित्त ॥१९॥

विगय हुं राखुं पंच, वाहणी तिन योडी(जोडी?) संच।
तंबोल पासेर छाजइ, सत एक वेस विराजइ ॥२०॥

दिनप्रति तिन वेस सोहइ, उचित्त भूषण मोदइ।
धर्म्मठामिं थिर थाउं, पेहरतां घणुं सुक्ख पाउं ॥२०(२१)॥

कांचलि कापडां कहीइ, शत शत प्रत्येकिं नहीइ।
भोगइ कुसुमनो सोंस, वाहणे च्यारनुं मोस ॥२१(२२)॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परिकरसुं शिय्या च्यार, आसाण बेसण बार।
विलेपण एक सेर कहीइं, बंभ सुद्ध कायाइ लहीइ ॥२२(२३)॥

त्रीस कोस दिनप्रतिं चालुं, तिन नाहण मासिं भालुं।
मासिं अंघोल वीस, कारणी अधिकी जगीस ॥२३(२४)॥

दिनप्रतिं अधमण भात, जल राखुं बेडां सात।
शालि चिणा जव गहुं, बाजरी मुंग मठ कहुं ॥२४(२५)॥

उडद जुगंधरी माल, बे करीओ कूरीवाल।
सामो समलाई कांग, बरटी कोद्रव लांग ॥२५(२६)॥

तवडा तुअरी चोला, मेथी तिल तिम भोला।
बीजां जे वलि धान, कारणी प्रदेसिं मान ॥२६(२७)॥

॥ ढाल-विवाहलु ॥

नालीअर नइ आंबां लिंबु काकडि जाति।
खडबुजां करेलां तिम गुंदगिरी जाति।
पोहक गहुं बाजरीनु सरसवनी निली भाजी।
तुरिया तिम मेथी बथुउ चोलाफली ताजी ॥२७(२८)॥

सिंघोडां टीडसां तिम लघु बदरी बोर।
प्रदेसइ जातां वलि हरी पंचसुं जोर।
कारणी मुज कल्पइ नीलवणीनु जिहां आहार।
पणि तिम आचरवुं जिम रहइ कुल आचार ॥२८(२९)॥

सुंकां नइ नीलां अन्ननां फलपत्र साग।
दिनप्रति कल्पइ भाणइ दसनु लाग।
खादिम स्वादिम मेवो लेवो भाखुं।
उचित्त जे लेवुं ते सवि मोकलुं राखुं ॥२९(३०)॥

सुंठि मरी पीपलिं पीपलामूल हुं जाणुं।
सोपारी प्रमुख ए मण एक वरसिं कारि आणुं।
साकरनइ घी तेल कोपरां खारिक खंड।
वरसिं मण तिन ते दससेर गुंद अखंड ॥२९(३१)॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभख्य जे बावीस अनंतकाय बत्रीस ।
आफू मुज कल्पइ कारणी बीजी जगीस ।
सचित्तनइ अचित्त औषध वेषध जेह ।
रोगादिक कारणी सवि कल्पइ वलि तेह ॥३०(३२)॥

हिवइ बोलुं पनर कर्मादान जे राखुं ।
दिनप्रतिं राधुं पंचमण संख्या भाखुं ।
एकमण तिम तलवुं अधमण सेकवुं धान ।
सातधात गलावुं वरसिं तिन मण मान ॥३१(३३)॥

रंगावुं सो नंग निखरावुं सो थान ।
वन कटि न करवी घर हेतइ जयणा प्रमाण ।
खाडणनइ दलवुं झाटकवुं तिम धोवुं ।
चालवुं नइ भरमवुं सवि दोय दोय मण जोवुं ॥३२(३४)॥

चूल्हा च्यार संधुंकुं माथां गुंथुं पंच ।
दडवुं तिम लिपवुं धोलवुं जयणा संच ।
गारि गोबर माटी मुरुड ओडला च्यालीस ।
बेटांजल च्यालीस दिनप्रतिं ए जगीस ॥३३(३५)॥

रुपीया सहस्सनो मइ करवो व्यापार ।
वरसिं बे घाणी धोणी मासिं च्यार ।
अंगीठादिकनो आदेसनो आचार ।
धर्म्म जाणी न पोखुं कुकड सर्प्प मंजार ॥३४(३६)॥

मासिं तिम मुंग धण सकट तिन विशेष ।
सावद्य हुं देउं आदेसनइ उपदेस ।
सावद्यनइ निरवद्य बीजा जे व्यापार ।
कारणी ते कल्पइ जाणि धर्म्म विचार ॥३५(३७)॥

आठमिं व्रतिं हिवइ अनरथदंड परिहार ।
भाषा जो जाणइ पाप न लागइ लगार ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काठिं सती चढती वधवा काढ्यो चोर।
उदेरी जोवा जावा न करुं सोर ॥३६(३८)॥

उखलनइ मूसल घरटी हल हथीयार।
माग्या नवि आपुं, कारणी जयणा सार।
हाथीनइ भेंसा मीढादिक ये यूद्ध।
उदेरी जोवा न करुं, वलि मति मूद्ध ॥३७(३९)॥

नाटिक नइ कौतिक जेठीना जे खेल।
सहजइ हुं जोउं उदेरी नही मेल।
हींचोलइ न हींचू अणगलनीरइ न झीलुं।
इम अनरथडंडइ मन नवि मूकुं ढीलुं ॥३८(४०)॥

॥ ढाल धन्यासी ॥

व्रत नुमइ सामायक पडिकमणा मली रे।
कीजइ वीस जगीस वरसिं रे, वरसिं रे कारणी जयणा राखीइ रे ॥३९(४१)॥

व्रत दसमिं बिजइ शिक्षाव्रतिं सदा रे।
संभारुं संखेपुं भावइ रे, भावइ रे चउदनियम रुडी परिं रे ॥४०(४२)॥

पौषध व्रत एकादसमिं वरसइ सदा रे।
दोय पोसहनुं मान कीजइ रे, कीजइ रे जयणा कारणनी कही रे ॥४१(४३)॥

वरसप्रतिं बारमिं व्रति गुणवंतनइ रे।
एक अतिथिसंविभाग कीजइ रे, कीजइ रे चउवीह संघमांहि जोईनइं रे॥४२(४४)॥

च्यार आगार छ छिडिसुं भावइ करी रे।
अरिहंतादिक पांच शाखिं रे, साखिंइ रे जावजीव व्रत पालवां रे ॥४३(४५)॥

व्रतभंग जाणी आंबिल कइ नीवी करुं रे।
कइ वलि सो नवकार गुणवा रे, गुणवा रे कारणनी जयणा कही रे ॥४४(४६)॥

संवत सोल नवाणुंआ वरसिं लिखि रे।
पराणमति धर्म्मवंत तेहनी रे, तेहनी रे काति सुदि तेरसि रवौ रे ॥४५(४७)॥

सा भिखु तपगछनो श्रावक जाणीइ रे।
प्राणमति तस बेहनी पालइ रे, पालइ रे बारव्रत विगतइ करी रे ॥४५(४८)॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तपगछ धोरी सूरगोरी गुण गावती रे।
श्रीविजयदेवसूरीश सोहइ रे, सोहइ रे मोहइ मुखडुं देखति रे ॥४६(४९)॥

तसपट्ट भूषण गुणमणी रोहण जाणीइ रे।
श्रीविजयसिंहसूरीश राजइ रे, राजइ रे दिनदिन दोलिति दीपती रे ॥४७(५०)॥

तस गछ मांहि गुणमणी मंदिर मानीइ रे।
बुद्धिविजय कविराय तेहनो रे, तेहनो रे शुभविजय भावइ भणइ रे ॥४८(५१)॥

दिनप्रतिं पंच पर्वीमइ टीप वांचवी रे।
वांचतां हुइ कल्याण मुजनइ रे। मुजनइ रे मनवांछित सुख संपदा रे ॥४९(५२)॥

॥ इति बारव्रत टीप सुश्राविका पराणि पठनाय ॥

❋ ♦ ❋

धर्मपरीक्षा

भण्या गुण्या दीसई भला, जाणइ अरथ विचार।
धर्मपरीक्षा गहिबरिया, हीइ न जाणइ सार ॥८१॥

भावार्थः- बहुत पढ़े लिखे दिखते हो, विचार कर अर्थ की जानकारी भी अच्छी हो लेकिन धर्मपरीक्षा में व्याकुल लोग हृदय में उसका सार नहीं जानते।

माटी केरुं हांडलुं, ते परिखइ त्रिणि वार।
धर्म न परिखइ जीवडु, भमइ अनंतु काल ॥८२॥

भावार्थः- माटी का बर्तन लेते वक्त तीन बार (टकोरे देकर) परखता है, लेकिन जीव धर्म की परख नहीं करता है और अनंत काल (भव) भ्रमण करता रहता है।

जग सघलुं पारिखि भरिउं, परिखि लिइ नरनारी।
धर्म्म परीक्षा जे करइ, ते विरला संसारि ॥८३॥

भावार्थः- पूरा जगत परीक्षा करके (अपने पास) भर लिया है, (अपने कामहेतु) नर-नारी को भी परख लेता है, लेकिन जो धर्म की भी परीक्षा करता है, वह इस संसार में (इक्का दुक्का) विरला है।

ह.प्र.क्र.१३१०७१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेरुविजयजी कृत

वल्कलचीरी (प्रसन्नचंद्र राजर्षि) सज्झाय

डिम्पलबेन शाह

जिनोपदिष्ट धर्मना चार प्रकारोमां भावना चोथा नंबर पर अने सौथी बलीष्ठ दर्शावामां आवी छे। समय-समय पर पलटाता भावनाओना प्रवाह जीवने केवी रीते क्षणवारमां नरक, स्वर्ग अने मुक्तिनो अधिकारी बनावी दे छे तेनो हूबहू चितार प्रसन्नचंद्र राजर्षिना जीवन परथी प्राप्त थाय छे। भवगान महावीर साथे थयेल श्रेणिक राजाना राजर्षी संदर्भेना संवाद घणो बोध आपी जाय छे। ते ज प्रसंगने वर्णवती एक अप्रगट रचनानुं अत्रे संपादन करवामां आव्युं छे।

मंगलाचरण बाद कर्ताए प्रारंभे ज कृतिना प्रधानभावने प्रगट करतां कह्युं छे के- "भली भावना भाविइं भगतिस्युं भविजना, प्रसनचंद्रिं यथा मुगति पामी" अर्थात् भावना सारी भाववी, जे रीते प्रसन्नचंद्र राजर्षिए भावना द्वारा मुक्ति प्राप्त करी। कर्ता द्वारा प्रारंभे ज करायेल आवा निवेदन तथा कृतिमां वर्णवायेल प्रसंग परथी सहेजे समझाय छे के प्रधानपणे आ रचना प्रसन्नचंद्र राजर्षिनी कही शकाय। छतां प्रतमां वल्कलचीरी सज्झाय नाम आपेल होवाथी अमें पण शीर्षकमां ते ज नाम राखेल छे।

कृति परिचय

कृतिनो प्रसंग भगवान महावीर स्वामीना वखतनो होवाथी कवि द्वारा प्रारंभे मंगलाचरणमां वीरप्रभुने नमन तथा साथे गणधर भगवंतनुं पण स्मरण करायुं छे। तत्पश्चात् सोमचंद्र राजा, वल्कलचीरी अने प्रसन्नचंद्र राजर्षिनो प्रसंग वर्णववामां आव्यो छे। घटना सर्वविदित तथा कृतिनी भाषा सुगम होतां अहीं विस्तारथी जणावानी आवश्यकता जणाती नथी।

कर्ता परिचय

जयविजयजीना शिष्य मेरुविजयजी द्वारा आ कृतिनी रचना करवामां आवी छे। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा खाते आ कर्तानी कुल २४ जेटली कृतिओ प्राप्त थाय छे। तेमां एक कृति विजयराजसूरि सज्झाय पण प्राप्त थाय छे। तेना परथी तेओ विजयराजसूरि परंपराना होय तेवुं अनुमान करी शकाय। ते

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिवाय कर्ता विषे अन्य कोई माहिती प्राप्त थती नथी। कर्तानी अन्य कृतिओनी सूचि श्रुतसागरना जान्युआरी २०२० ना अंकमां पत्रांक १७ थी १८मां आपेल छे।

प्रत परिचय

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरना ज्ञानभंडारमां संग्रहित हस्तप्रत क्रमांक – ७४६९३मां वल्कलचीरी सज्झाय तथा साधारणजिन स्तवन छे। पेटांक धरावती आ प्रत अपूर्ण छे. पत्रांक-१अ-१आ पर पेटांक-१ वल्कलचीरी सज्झाय छे, जे संपूर्ण छे ज्यारे पत्रांक-१आ पर पेटांक-२ साधारणजिन स्तवन अपूर्ण छे। अक्षर सुंदर अने सुवाच्य छे। एकमात्र आ प्रतना आधारे प्रस्तुत कृतिनुं संपादन करायुं छे।

वल्कलचीरी सज्झाय

॥ढि०॥ *॥ राग आसाउरी ॥ देशी कडखानी ॥*

श्री वीरजिन नमन विधिसु अणुसरी, गुणधरा गणधरा सकल समरी।
भावना भावुको भाविस्युं भाविइं, भाववंतइ वरी अमरी कुमरी ॥१॥

भली भावना भाविइं भगतिस्युं भविजना, प्रसनचंद्रिं यथा मुगति पामी।
श्रेणिकइं पूछीयुं वीतरागिं कहिवुं, ते सुणो कवि कहइ सीस नामी ॥२॥भ०...

पोतनाभिध नगर नकर राजा तिहां, सोम सम वदन नृपति सोमचंद्रो।
तास वनिता गुणधारणी धारणी, शीलवंती यथा विशदचंद्रो ॥३॥भ०...

एक दिन पलित[१] शिर देखिं राणी कहइ, शमन केरो प्रभु दूत आव्यो।
ए तेह वाणी सुणी धारणीयुत नृपति, तापसी व्रत ग्रहइं भलूं अ फाव्यो ॥४॥भ०...

राज पालइ प्रसनचंद्र भूपति भलूं, न्याय चालइं जें अन्याय टालइ।
धारणी गुरवणी मात पहिलां हती, पुत्र प्रसव्यो तेणइं वन विचालइ ॥५॥भ०...

सूत रोगइ करी कालधरम धरी, धारणी मात परलोक साधइ।
देवकुमर समो चरम देही नमो, कुमर ससी जेम वनमाहिं वाधइ ॥६॥भ०...

वाकलां[२] चीर पहर्यां थकी तेहनुं, वकलचीरी जनक नाम थापइं।
फूल वन फल असन[३] वसन पाणि प्रमुख, आणि निज तातनइं तेह आपइं ॥७॥भ०...

दिवस केता थया तेह वन माहि रह्यां, प्रसनचंद्रइं घरिं वात पामी।
चतुरपुर नायिका कामनी सायिका, भाइनइ तेडवां तेह धामी ॥८॥भ०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तेह वनमां जइं निपुण वनिता थइ, भोलव्यो रोलव्यो गीतगानइं।
थाल मोदिक भरी अंग फरसइ[४] करी, लालचइं लालव्यो धन्य मानिं ॥९॥भ०...

वल्कली करि धरी तेह पाछी फरी, ताणिउं अणिउं भाई पासइं।
चित्त हरख्यो घणुं मान दीधुं घणुं, दिवस केते गया तात पासइं ॥१०॥भ०...

तात पदकज नमी पासिं बइठा यमी, वल्कली तातनां पात्र पूंजइं।
पुंजीआं पात्र पूर्विं प्रतिलोकतां, इम इहां पोहथी पाप धूजइं ॥११॥भ०...

तातनां भांड प्रतिलेखतां तेहनइं, उपनुं विमल अमल केवलनाणं।
देवकृत कमल बइसी कहइं देसना, भावना तप विमल शील दाणं ॥१२॥भ०...

सोमचंद्रइं परी[५] जैन दिख्या वरी, पालि संयम अमल शिव सधावइ।
राजनो भार निज पुत्रनइ सिर धरी, प्रसनचंद्रो लीइं संजम भावइ ॥१३॥भ०...

लेइ चारित्र सुपवित्र विचरइ यती, नगर राजगृही पवन आवइ।
ध्यान काउसगि करइं सूर नजरइ धरइ, हाथ उंचे शिववधू चलावइ ॥१४॥भ०...

वीरजिन वंदवा श्रेणिक संचरइं, साथइं दोय चर सुमुख दुमुख नामइं।
साधु काउसगि रहियो सिद्धिसुं उमहयो, देखि कहइ सुमुख धन धान्य नामइं ॥१५॥भ०...

सुमुखनुं वचन इम दुमुखनि सुणी कहइ, स्युं थुणइं धर्मविण एह साधु।
राजनो भार निज बाल सुत सिर ठवी, स्यो धर्यो वेष इति नही य साधु ॥१६॥भ०...

बालसुत राज बइठो सूण्यो गोत्रीइं, नगर वीटी रह्या तेह आवी।
इम कही ते गयो साधु मन चल थयो, ध्यान तस नवि रहियो सुमति नावी ॥१७॥भ०...

ध्यानमां साध सन्नाह[६] टोपइं[७] सहित, धनुष तरुआर हथिआरि भीडइं।
नगर जाइ अड्यो वैरी बलमां पड्यो, आथड्यो शस्त्रविण अधर[८] पीडइं ॥१८॥भ०...

श्रेणिकइं गज थकी उतरी मुनी नम्यो, ध्यान परवस पणइं पणि न जाण्यो।
विनय विधि साचवी साधु संभारतो, वीरजिन पद नमी मुनि वखाण्यो ॥१९॥भ०...

राय अवसर लही पूछीउं सामिनइं, काल करी कवण गति साधु साधइं।
वीर मुख इम कहइ नरग पहिलइ तथा, बीजी त्रीजी इम सात वाधइं ॥२०॥भ०...

साध हथिआर विण खेद पामइं घणुं, आ हणुं पाहनइ टोप लेइ।
चींतवी एम मनिं हाथ उचो करइ, लोच सिर देखि तव सुमति वेइ ॥२१॥भ०...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीरजिन वचन संदेह आणि नृपइं, पुछीउं कबण गति साध केरी ।
सामि कहइं सिद्धि सरवाथइं ए भजइं, टालि निज वेग भव भ्रमण फेरी ॥२२॥भ०...

साध निज मन थकी आप निंदइ घणुं, जीव तइ स्युं कर्युं ए अकाज ।
सर्वथा सर्वथी विरतिमहि लावरी, कवण तुझ पुत्र कुण एह राज ॥२३॥भ०...

ध्यान उत्तम चड्यो योग ठाणइ अड्यो, कर्मनां दल प्रबल सकल भाजी ।
प्रसन ऋषिराज ततखिण थयो केवली, गगन सूर दुंदुंभि गुहिर[१०] गाजि ॥२४॥भ०...

दुंदुंभि स्वर सुणी राय पूछइ तथा, वीर कहइ उपनुं केवलनाणं ।
प्रसन ऋषिराज नुं चरित मांडी कहइ, सुमुखनइ दुमुखनुं वचन जाणं ॥२५॥भ०...

राय जिनराज ऋषिराज वंदी थुणइं, धन्य ए धन्य कही नगरि पोहतउ ।
प्रसन मुनि केवली चारित्र केवली, हेलवी[९] मुगति मुनि वेग पोहतो ॥२६॥भ०...

सकल कविराज सिर मुकुट जयविजय गुरु, सीस मुनि मेरु कहइ हाथ जोडी ।
जेह उपशम भर्या तेह मुनि निस्तर्या, संभर्या घर भरइ कनक कोडी ॥२७॥भली भा०...

इति वल्कलचीरी सज्झाय

शब्दकोश

१. पलित – सफेद वाळ
२. वाकलां – वल्कल
३. असन – खाद्य सामग्री
४. फरसइ –स्पर्शे
५. परी – जेम
६. सन्नाह - बख्तर
७. टोपइं – युद्धमां पहेरवानुं शिरस्त्राण
८. अधर – होठ
९. हेलवी – घडीमां
१०. गुहिर – गंभीर

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर में प्रकाशनाधीन कृति सूची[1]

क्रम	कृति नाम	कर्ता	रचना वर्ष	गाथा प्रमाण
१	२४ जिनकल्याणक स्तवन	मुनि समरसिंघ	-	गाथा-६५
२	१२ आराकालचक्र स्तवन	मुनि अमृतविजय	१८२३	गाथा-८२, ढाल-५
३	१२ व्रत चौपाई	मुनि आनंदकीर्ति	१६८०	गाथा-७६
४	१२ व्रत चौपाई	उपाध्याय उदयरत्न	१७६५	गाथा-१६६५, ढाल-७७
५	२० विहरमानजिन स्तवन	मुनि श्रीपाल	१६४४	गाथा-३०, ढाल-३
६	अंजनासुंदरी रास	मुनि पुण्यसागर	१६८९	खंड-३, गाथा-६३२, ढाल-२२
७	अंजनासुंदरी रास	मुनि शांतिकुशल	१६६७	गाथा-५७१
८	अंबडनृप चरित्र	गजविजय	१७७९	खंड-७, गाथा-१३५५, ढाल-५१
९	अक्षरबत्तीसी	मुनि रूपविजय	-	गाथा-४०
१०	अमरदत्तमित्रानंद चौपाई	नेमिविजय	१७२७	गाथा-५०५, ढाल-२४
११	अमरसेन वयरसेन चौपाई	मुनि धर्मवर्धन	१७२४	गाथा-३५४, ढाल-१८
१२	अर्बुदगिरितीर्थ स्तवन	मुनि अमीसागर	१८६२	गाथा-४२, ढाल-२
१३	अष्टापदतीर्थ सलोको	पंन्यास नीतविमल		गाथा-५५
१४	आत्मराज रास	सहजसुंदर	१५८८	गाथा-१०१
१५	आरामनंदन प्रबंध	मुनि भक्तिकुशल	१६८१	गाथा-३७०
१६	आर्द्रकुमारमुनि सज्झाय	वाचक कनकसोम	१६४४	गाथा-४९, ढाल-५
१७	इक्षुकारराजा चौपाई	गणि खेमराज	१६वी	गाथा-५१
१८	उत्तमकुमार चरित्र	विजयशील	१६४१	गाथा-६३८
१९	उत्तमकुमार चरित्र	विनयचंद्र	१७५२	गाथा-८४८, ढाल-४२
२०	उत्तमकुमार चौपाई	मुनि तत्त्वहंस	१७३१	गाथा-१२४५, ढाल-५१
२१	कलियुग रास	वाचक पुण्यहर्ष	-	गाथा-१०१

1. कोरोना की महामारी के समय में कोबा द्वारा 'वर्क फ्रोम होम' अन्तर्गत इन कृतियों पर लिप्यंतर कार्य किया गया है और भविष्य में संपादन कार्य किया जाएगा।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२२	कामावती रास	शिवदास		गाथा-५६८
२३	कुलध्वज रास-शीलोपरी	वाचक धर्मसमुद्र	१५८४	गाथा-१३८
२४	चंदनमलयागिरि चौपाई	जिनहर्ष	१७४४	गाथा-४०७, ढाल-२३
२५	चंदनमलयागिरि चौपाई	कवि- केसर	१७७६	गाथा-२६५, ढाल-११
२६	चंदनमलयागिरि चौपाई	मुनि कल्याण कलश	१६९३	गाथा-१२८, ढाल-७
२७	चंदनमलयागिरि रास	मुनि भद्रसेन	१७१६	अध्याय-५, गाथा-१९९
२८	चंदनमलयागिरी चौपाई	मुनि अजितचंद	१७३६	खंड-४, गाथा-११६५, ढाल-३२
२९	चंदनमलयागिरी चौपाई	उपाध्याय सुमतिहंस	१७११	गाथा-२६५, ढाल-१६
३०	चंदनमलयागिरी चौपाई	अज्ञात जैनश्रमण	१७७८	गाथा-२७३, ढाल-१९
३१	चंद्रलेखा रास	मुनि मतिकुशल	१७२८	गाथा-६२४, ढाल-२९
३२	जिनदत्तराजा रास	रत्नसुंदरसूरि	१६०७	गाथा-१०८०, खंड-४
३३	जीवराशि क्षमापना रास	अजितदेवसूरि	१५९७	गाथा-१५०
३४	त्रिभुवनसिंहकुमार रास	गणि उत्तमसागर	१७१२	गाथा-६४७, ढाल-४४
३५	दयाछत्तीसी			गाथा-३६
३६	धन्नाऋषि चौपाई	मुनि जिनव्रधमान	१७७२	गाथा-६११, ढाल-३१
३७	धम्मिल रास	मुनि ज्ञानसागर	१७१५	खंड-३, गाथा-१००६, ढाल-२०
३८	धम्मिलऋषि चौपाई	आचार्य सोमविमलसूरि	१५९१	गाथा-२८२
३९	नवकार रास	मुनि राजरत्न	१७७५	गाथा-७०२, ढाल-४५
४०	नेमिजिन रास	शुभविजय		गाथा-८१
४१	परिग्रहप्रमाण टिप्पनक	मुनि हर्षकुंजर शिष्य	१६१०	गाथा-४७
४२	पुरोहितपुत्र सज्झाय	उपाध्याय सहजसागर	१६६९	गाथा-६४, ढाल-३
४३	पूजाविधि रास	ऋषभदास संघवी	१६८२	गाथा-५६६
४४	बुद्धिबहोत्तरी	मुनि कुशल	१८३९	गाथा-७३
४५	मदननरेश्वर चौपाई	मुनि दामोदर	१६६९	गाथा-५५७
४६	मदनश्रेष्ठी चरित्र	छगन मुनि	१९८४	खंड-७, गाथा-१२९१

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४७	मुनिपति चौपाई	पंन्यास हीरकलश	१६०८	गाथा-७३३
४८	मेतारजमुनि सज्झाय	मुनि उदयहर्ष	१७७८	गाथा-४०, ढाल-५
४९	रात्रिभोजन परिहार सज्झाय	उपाध्याय आनंदनिधान	१६७५	गाथा-६९
५०	रामसीता चरित्र	मुनि चेतनविजय	१८५१	गाथा-४१५, ढाल-२३
५१	रिषभदत्त रूपवती चोपाई	मुनि अभयकुशल	१७३७	गाथा-४८९, ढाल-२७
५२	वीरांगद चौपाई	वाचक मालदेव	१६१२	गाथा-७०४
५३	शुकराज रास	मुनि राजपाल	१६४१	गाथा-५५३
५४	श्रीपालराजा रास	मुनि लक्ष्मीविजय	१७२७	गाथा-८०५
५५	श्रेणिकराजा चरित्र	मुनि वल्लभकुशल	१७७४	गाथा-१२३६, ढाल-५०
५६	सदयवच्छ रास	मुनि रंगविजय	१८५६	खंड-४, गाथा-२६६८, ढाल-८३
५७	सनत्कुमारचक्रवर्ति रास	आचार्य पुण्यरत्नसूरि	१६३७	गाथा-२८१
५८	समाधिमरण रास	मुनि मोहन	१८७८	गाथा-१८९, ढाल-११
५९	सुभद्रासती चौपाई	गणि रूपवल्लभ	१८२५	गाथा-५४०, ढाल-२५

क्या आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं ?

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा में आगम, प्रकीर्णक, औपदेशिक, आध्यात्मिक, प्रवचन, कथा, स्तवन-स्तुति संग्रह आदि विविध प्रकार के साहित्य प्राकृत, संस्कृत, मारुगुर्जर, गुजराती, राजस्थानी, पुरानी हिन्दी, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में लिखित विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित बहुमूल्य पुस्तकों का अतिविशाल संग्रह है, जो हम ज्ञानभंडारों को भेंट में देते हैं। भेंट में देने योग्य पुस्तकों की सूची तैयार है। यदि आप अपने ज्ञानभंडार को समृद्ध करना चाहते हैं, तो यथाशीघ्र संपर्क करें। पहले आने वाले आवेदन को प्राथमिकता दी जाएगी।

ग्रंथपाल

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्मवाद, जैन कर्म साहित्य अने पंच संग्रह

पुण्यविजयजी

(हीरालाल देवचंद शाह द्वारा वि.सं. १९९७मां प्रकाशित 'श्रीमान् चंद्रमहत्तराचार्य विरचित पंच संग्रह' पुस्तक द्वितीय खंडना आमुख मांथी साभार)

भारतीय दर्शनसाहित्यमां कर्मवादनुं स्थान

केवलज्ञानदिवाकर, सर्वतत्त्वरहस्यवेदी, विश्वोपकर्ता अने जगदुद्धर्ता श्रमण भगवान श्री वीर-वर्धमान तीर्थंकरे प्रतिपादन करेल जैनदर्शनमां स्याद्वाद, अहिंसावाद वगेरे वादो जेम एना महत्त्वना अंग स्वरूप छे। ए ज रीते अने एटला ज प्रमाणमां कर्मवाद ए पण एनुं एवुं ज प्रधान अंग छे।

स्याद्वाद अने अहिंसावादना व्याख्यान अने वर्णनमां जेम जैनदर्शने जगतभरना साहित्यमां एक भात पाडी छे, ए ज प्रमाणे कर्मवादना व्याख्यानमां पण एने एटलां ज कौशल अने गौरव दर्शाव्यां छे। ए ज कारण छे के, जैनदर्शने करेली कर्मवादनी शोध अने तेनुं व्याख्यान ए बन्नेय भारतीय दर्शन साहित्यमां तेना अनेकान्तवाद, अहिंसावाद वगेरे वादोनी माफक चिरस्मरणीय महत्त्वनुं स्थान भोगवी रहेल छे।

जैनदर्शनमां कर्मवादनुं स्थान

आजे सामान्य मान्यता एवी छे के "जैनदर्शन कर्मवादी छे" अलबत्त, आ मान्यता असत्य तो नथी ज; छतां आ मान्यतानी आडे एक एवी भ्रान्ति जन्मी छे के "जैनदर्शन मात्र कर्मवादी छे" आ संबंधमां कहेवुं जोईए के "जैनदर्शन मात्र कर्मवादी छे एम नथी, पण ते विश्ववादी छतां टूंकमां महातार्किक आचार्य श्री सिद्धसेन दिवाकरना-

कालो सहाव नियई पुव्वकयं पुरिसकारणेगंता।
मिच्छत्त ते चेवा समासओ होंति सम्मत्तं ।।

आ कथनानुसार कालवाद, स्वभाववाद वगेरे पांच कारणवादने माननार दर्शन छे।" कर्मवाद ए उपरोक्त पांच कारणवाद पैकीनो एक वाद छे, आम छतां उपर जणावेल भ्रान्त मान्यता उद्भववानुं मुख्य कारण एटलुं ज छे के जैनदर्शने मान्य करेल पांच वादो पैकी कर्मवादे साहित्यना क्षेत्रमां जे विशाळ स्थान रोकेलुं छे एना शतांश जेटलुंय स्थान बीजा एक पण वादे रोक्युं नथी। आ उपरथी समजी शकाशे के "जैनदर्शन मात्र कर्मवादने माननार दर्शन नथी, पण ते टूंकमां पांच कारणवादने माननार अनेकान्तवादी दर्शन छे।"

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मौलिक जैन कर्मसाहित्य

जैन कर्मवादनुं स्वरूप अने तेनुं व्याख्यान अत्यारे विद्यमान जैन आगमोमां छूटुं अमुक प्रमाणमां होवा छता ए एटलुं अपूर्ण छे के जे जैन कर्मवादनी महत्ताना अंगरूप न बनी शके; तेम ज जैन आगमो पैकीनुं कोईपण आगम एवुं नथी जे केवळ कर्मवाद विषयने लक्षीने होय।

आ स्थितिमां सौ कोईने ए जिज्ञासा सहेजे ज थाय अने थवी ज जोईए के, "त्यारे जैनदर्शनना अंगभूत कर्मवादना व्याख्याननुं मूळ स्थान क्युं?" आ विशे जैन कर्मवाद विषयक साहित्यना व्याख्याता अने प्रणेताओनो ए जवाब छे के "जैन कर्मवाद विषयक पदार्थोनुं मूळभूत, विस्तृत अने संपूर्ण व्याख्यान कर्मप्रवादपूर्वमां अर्थात् कर्मप्रवादपूर्व नामक महाशास्त्रमां करवामां आव्युं छे; ए महाशास्त्रना आधारे अमारुं कर्मवादनुं व्याख्यान, ग्रंथ रचना वगेरे छे।"

आजे आ मूळभूत महाशास्त्र काळना प्रभावथी विस्मृति अने नाशना मुखमां पड़ी गयुं छे। आजे आपणां समक्ष विद्यमान कर्मवाद विषयक साहित्य ए उपरोक्त महाशास्त्रना आशयने आधारे निर्माण करायेल अंशरूप साहित्य छे।

उपर जणावेल महाशास्त्रनी विस्मृति अने अभावमां कर्मसाहित्यना निर्माताओने कर्मवाद विषयक केटलीये वस्तुओनां व्याख्यानो प्रसंगे प्रसंगे छोड़ी देवां पड्यां अने केटलीये वस्तुओनां विसंवाद पामतां तात्त्विक वर्णनो श्रुतधरो उपर छोडी देवामां आव्यां छे"[1]

1. (क) "अकरण अणुइन्नाए अणुओगधरे पणिवयामि ॥१॥"
"करणं क्रिया, ताए विणा जा उवसामणा सा अकरणो वसामणा..... ताते अणुओगो वोच्छिन्नो तो तं अजाणंतो आयरिओ जाणंतस्स नमोक्कारं करेति ॥" (कर्मप्रकृतिचूर्णि-उपशमनाकरणे॥)
"अकरणकृतोपशमनाया नामधेयद्वयम्, तद्यथा- अकरणोपशमना, अनुदीर्णोपशमना च तस्याश्च सम्प्रत्यनुयोगो व्यवच्छिन्नः।" (मलयगिरीया टीका ॥)
(ख) तत्र या करणरहिता तस्या व्याख्या नास्ति, तद्वेतृणामभावात् । (पंचसंग्रहे स्वोपज्ञ टीका।)
(ग) "जीवपदप्रतिबद्धानां त्वालापगणनादीनां द्वाराणां प्ररूपणा सम्प्रदायाभावाद् न क्रियते" (बृहत्कल्पसूत्र विभाग ४, पत्र १२१९)
(घ) "शेषाणि तु द्रव्यप्रमाणादीनि सप्तानुयोगद्वाराणि कर्मप्रकृतिप्राभृतादीन् ग्रन्थान् सम्यक् परिभाव्य वक्तव्यानि । ते च कर्मप्रकृति प्राभृतादयो ग्रन्था न सम्प्रति वर्तन्ते इति लेशतोऽपि दर्शयितुं शक्नोति तेनावश्यं दर्शयित्वायनि। प्रज्ञोन्मेषो हि सतामद्यापि तीव्रतीव्ररक्षयोपशमभावेनासीमो विजयमानो लक्ष्यते । अपि चान्यदपि यत् किञ्चिदपि यत् किञ्चिदिह क्षूणमापतितं तत् तेनापनीय

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जैन कर्मसाहित्यना प्रणेताओ

जैन कर्मवाद विषयक साहित्यना प्रणेताओ श्वेतांबर अने दिगंबर एम बे विभागमां वहेंचाई जाय छे, ते छतां कर्मवादनुं व्याख्यान अने वर्णन तो एक रूपमां रह्युं छे। ए ज कारण छे के दरेक तात्त्विक विषयमां बन्नेय संप्रदाय समानतंत्रीय तरीके ओळखाय छे। ए साहित्यनी विशेषताना विषयमां पण उभय संप्रदाय समान दरज्जामां ऊभा छे। अलबत्त, ग्रंथकर्ताओना क्षयोपशमानुसार ग्रंथरचना अने वस्तु वर्णनमां सुगम-दुर्गमता, न्यूनाधिकता के विशदाविशदता हशे अने होई शके, ते छतां, वास्तविक रीते जोतां, बन्नेय पैकी कोईनाय कर्मवाद विषयक साहित्यनुं गौरव ओछुं आंकी शकाय तेम नथी। अवसरे अवसरे, जेम दरेक विषयमां बने छे तेम, कर्मवाद विषयक साहित्यमां पण उभय संप्रदाये एक-बीजानी वस्तु लीधी छे, वर्णवी छे अने सरखावी पण छे। ए ज पुरवार करे छे के कर्मवाद विषयक साहित्यमां बन्नेय पैकी एकेयनुं गौरव ओछुं नथी।

बन्नेय संप्रदायमां कर्मवाद विषयक निष्णात आचार्यो एक समान दरज्जाना थया छे, जेमना वक्तव्यमां क्यांय स्खलना न आवे। कर्मप्रकृति, पंचसंग्रह जेवा समर्थ ग्रंथो, तेनो विषय अने तेना नाम आपवा वगेरे बाबतमां पण बन्नेय संप्रदाय एक कक्षामां ऊभा छे।

श्वेतांबर संप्रदायमां भगवान श्री शिवशर्मसूरि, चूर्णिकार आचार्य, श्री चंद्रर्षि महत्तर, श्रीमान गर्गर्षि, नवांगी वृत्तिकार आचार्य श्री अभयदेवसूरि, श्री मुनिचंद्रसूरि, मलधारी श्री हेमचंद्राचार्य, श्री चक्रेश्वरसूरि, श्रीमान धनेश्वराचार्य, खरतर आचार्य श्री जिनवल्लभसूरि, आचार्य श्री मलयगिरि, श्री यशोदेवसूरि, श्री परमानंदसूरि, बृहद्गच्छीय श्री हरिभद्रसूरि, श्री रामदेव, तपा आचार्य श्री देवेन्द्रसूरि, श्री उदयप्रभ, श्री गुणरत्नसूरि, श्री मुनिशेखर, आगमिक श्री जयतिलकसूरि, न्यायविशारद न्यायाचार्य महोपाध्याय श्री यशोविजयजी वगेरे संख्याबंध मौलिक तेम ज व्याख्यात्मक कर्मवाद विषयक साहित्यना प्रणेता अने व्याख्याता निष्णात आचार्यो अने स्थविरो थई गया छे। ए ज रीते दिगंबर संप्रदायमां पण भगवान श्री पुष्पदंताचार्य, श्री भूतबलि आचार्य, श्री कुन्दकुन्दाचार्य, स्वामी श्री समन्तभद्राचार्य, श्री गुणधराचार्य, श्री यति वृषभाचार्य, श्री वीरसेनाचार्य, श्री नेमिचंद्र सिद्धान्तचक्रवर्ती वगेरे कर्मवाद विषयक साहित्यना प्रणेता अने व्याख्याता पारंगत आचार्यो अने स्थविरो थया छे।

क्रमशः

तस्मिन् स्थानेऽन्यत् समीचीनमुपदेष्टव्यम्। सन्तो हि परोपकारकरणैकरसिका भवन्तीति॥ (सप्ततिका गाथा ५३, मलयगिरीया टीका पत्र २४१")

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्राचीन पाण्डुलिपियों की संरक्षण विधि

राहुल आर. त्रिवेदी

(गतांक से जारी)

पारंपरिक देशी उपाय

वर्तमान में अनेक प्रकार के आधुनिक रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है। परन्तु हमें ऐसे रसायनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए, बल्कि पारंपरिक असरदार तरीके अपनाने चाहिए। अभी भी संरक्षण के पारंपरिक तरीके प्रचलन में हैं, क्योंकि इन विधियों की अपनी खूबियाँ हैं- ये मानव स्वास्थ्य के लिए खतरनाक नहीं हैं। इनसे सामग्री पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है। इन विधियों में अधिक विशेषज्ञता तथा उपकरण और धन की आवश्यकता नहीं होती है। ये सामग्रियाँ सैकडों बरसों से हर परिस्थिति में सफलतापूर्वक आजमाई हुई है।

इस संदर्भ में प्रभावशील सामग्रियों को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

ताडपत्रों की सुरक्षा के लिए निम्नलिखित वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है-

क) जिंजली तेल ख) सरसों का तेल

ग) सिद्रनोला तेल घ) नीम का तेल

ङ) काजू का तैल च) हल्दी पावडर

ताडपत्रों में से फफूंद को साफ करने के लिए निम्नलिखित पदार्थों का प्रयोग किया जाता है-

क) अजवायन की गंध ख) नींबू का तेल

ग) कपूर+नारियेल तेल घ) चाय के पौधे का तेल

कागज एवं ताडपत्र के पाण्डुलिपियों को संग्रहित किए जानेवाले कबाटों एवं आलमारियों में पारंपरिक औषधियाँ रखी जाती थीं, जो इस प्रकार है-

१. कलौंजी-१०० ग्राम, घुडवच्छ (घोड़ावच)-१०० ग्राम, दालचीनी-१०० ग्राम, लौंग-२५ ग्राम, पीपर-२५ ग्राम इन पाँचों को पीसकर ५ ग्राम कपूर मिलाकर चूर्ण तैयार कर पोटली रखने पर इसका प्रभाव ६ माह तक रहता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

२. छोटे पैकेट में अश्वगंधा और उसके सूखे पत्तों को रखा जाता है

३. सेब के बीज के पाउडर का उपयोग पांडुलिपियों पर पनपने वाले कीड़ों को हटाने के लिए किया जाता है।

४. सूखे तम्बाकू के पत्ते कीड़ों के हमले से पांडुलिपियों की सुरक्षा करते हैं। पत्तियों को आम तौर पर छोटे कपड़े की थैलियों में पैक किया जाता है या आलमारियों में फैला दिया जाता है जहाँ पांडुलिपियाँ रखी होती हैं। पत्तियों का निकोटिनिक एसिड कीड़ों को पाण्डुलिपियों से दूर रखता है।

५. छाया में सुखाई गई नीम की पत्तियाँ पाण्डुलिपियों को सुरक्षित करती है।

६. सीताफल (शरीफे) के बीज को पोटली में रखा जाता है।

७. साँप की कैंचुली पोथी/कबाटों में रखी जाती है।

इस तरह पारम्परिक रूप से आजमाए हुए इन देशी उपायों से इस अमूल्य विरासत को सुरक्षित रखा जा सकता है ।

परंपरागत देशी उपाय :

जैन संस्कृति में ग्रन्थों को संभालना धर्म कहा गया है। ग्रन्थों को वैसे स्थान पर रखा जाता है जहाँ धूल आदि न हो और उनका अपमान न हो। कागज पाण्डुलिपियों के पन्ने मुड़ें नहीं, किनारियों का घर्षण न हो इसलिए पाटी, पाठा और पुट्ठों का उपयोग किया जाता है तथा ताडपत्रों के लिए सीसम एवं साग की बनी हुई लकडी की पट्टियों का उपयोग किया जाता है। पढते समय ग्रंथ के पत्रों को अच्छी तरह हाथ में थामने के लिए पट्टिका आधार बनती है। पत्र मुड के टूटते नहीं, हवा आदि के झोंके से सुरक्षित रहते हैं, इनके उपयोग के कारण ग्रन्थ के पन्ने अस्तव्यस्त नहीं होते हैं।

ग्रंथो को पढते वक्त बाहर रखे पन्नों पर 'कवली' रखी जाती है जिससे पन्ने उड़ते नहीं है और उन्हें नुकसान पहुँचता नहीं है। इन ग्रंथों को दाबडाओं(बक्सों) में रखा जाता था। दाबडाओं के चार प्रकार बताए गये हैं-

१. लकडी से निर्मित दाबडा, २. कागज से निर्मित दाबडा, ३. चमड़े से निर्मित दाबडा एवं ४. चंदन से निर्मित दाबडा। ऐसे कई दाबडाएँ भिन्न-भिन्न ज्ञानभंडारों में प्राप्त होते हैं।

लकड़ी से निर्मित दाबडा

दाबडा अर्थात् एक प्रकार की पेटी या डब्बा कह सकते हैं। इस दाबडा की

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लकडी को बाहर से पॉलिश किया जाता है। उसके ऊपर चंदन का रस अथवा पीले-लाल आदि मिश्रित रंगों को लगाया जाता है। इन दाबडाओं को रंग देने से जीव-जन्तु इससे दूर रहते हैं।

कागज से निर्मित दाबडा

अनुपयोगी कागजों को एकत्रित कर पानी में भिगोकर उसे कूटकर उसमें मेथी आदि चिकने पदार्थों को मिलाया जाता है। उससे सुंदर दाबडाओं का निर्माण किया जाता है। उन दाबडाओं को रेशमी या सूती कपड़े से आच्छादित किया जाता है, अधिकतर दाबड़ाओं पर लाल एवं सफेद रंग के कपड़े मढे जाते हैं। उन कपडों पर रंग चढाया जाता है अथवा चित्र भी बनाये जाते हैं । इनमें प्रायः ताडपत्रीय ग्रंथों को रखा जाता है और उसको डोरी से बांधा जाता है। पाटण आदि ज्ञानभंडारों में ऐसे दाबड़े पाए जाते हैं।

चमड़े से निर्मित दाबडा

कागज के दाबड़ाओं पर जैसे कपड़े मढ़े जाते हैं, वैसे ही चमड़े के दाबड़ाओं पर कपड़े का उपयोग किया जाता है। कागज की पाण्डुलिपियों के लिए चमड़े का आवरण भी होता था। चमड़े के दाबड़ाओं का उपयोग अधिक लाभदायक होता है।

चंदन से निर्मित दाबडा

लकडी के दाबड़ाओं की तरह चंदन की लकड़ियों से भी पेटी बनाई जाती थी। उनमें आगमिक विशिष्ट धार्मिक ग्रंथो को रखा जाता था। ये दाबड़े साधारण रूप से या सुंदर ग्रंथों के प्रसंगों के आधार पर तराशे जाते थे।

इन दाबडाओं में रखे गए ग्रन्थों को हवा, पानी, कीट आदि से बचाया जा सकता है। मुख्यतः ग्रंथों को ही कपडे व पट्टिकानुमा डोरी से आवेष्टन किया जाता है, यह बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसके लिए एक सूक्ति है कि 'शत्रुवत् बंधेत् पुस्तकम्' पुस्तक को दुश्मन की तरह दृढ बंधन में बांधना चाहिए। दाबडों में रखने व पट्टिकाओं के साथ दृढ बंधन के अधिक फायदा ग्रंथों को प्राप्त होता है।

पाण्डुलिपियों को दृढ बंधन के फायदे-

ग्रंथों को दृढ बंधन में न रखने से उसके अंदर हवा का संचार होता जिससे कागज में रहे क्लोरीन दीर्घकाल के बाद उसे जलाकर काला कर देती है। यदि दृढ बंधन किया हुआ रहता है, तो उसमें हवा न जाने से नमी और फफुंद होने की संभावना नहिवत् हो जाती है। जीवातों के लिए प्रवेश व आगे बढना दुष्कर हो जाता है तथा

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आकस्मिक आग भी लग जाय तो अंदर ऑक्सीजन की कमी के कारण आग भी सरलता से नहीं लगती है मात्र किनारियों को जला सकती है। इस हेतु पाण्डुलिपियों के लेखकों के द्वारा भी लिखा गया है कि-

जलाद्रक्षेत् तैलाद्रक्षेत् रक्षेत् शिथिल बंधनात् ।
उदकानलचौरेभ्यो, मूषकेभ्यो हुताशनात् ।
मूर्खहस्ते न दातव्यं एवं वदति पुस्तकम् ।।१।।

पाण्डुलिपियों की पानी, वायु, चोर, चूहे तथा अग्नि से रक्षा करनी चाहिए। पुस्तक ऐसा कहती है कि जल से, तेल से तथा शिथिल बन्धन से भी (हमारी) रक्षा करनी चाहिए तथा मूर्ख के हाथ में नहीं देनी चाहिए ।

भग्नपृष्ठिकटिग्रीवा, वक्रदृष्टिरधोमुखम् ।
कष्टेन लिखितं शास्त्रं, यत्नेन परिपालयेत् ।।२।।

क्योंकि इन पाण्डुलिपियों को प्रतिलेखकों ने कड़ी मेहनत से लिखा होता है। इसका वर्णन करते हुए कहते हैं कि गर्दन, पीठ और मस्तक को झुकाकर, वक्र दृष्टि रखकर बड़े कष्ट से इस ग्रन्थ को लिखा है, अतः उसे बहुत सावधानी से संभालना चाहिए ।

लेखकों ने भी पांडुलिपियों को अपने पुत्रों के समान सुरक्षा देने का अनुरोध किया है।

(क्रमशः)

श्रुतसागर के इस अंक के माध्यम से प. पू. गुरुभगवन्तों तथा अप्रकाशित कृतियों के ऊपर संशोधन, सम्पादन करनेवाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि आप जिस अप्रकाशित कृति का संशोधन, सम्पादन कर रहे हैं अथवा किसी महत्त्वपूर्ण कृति का नवसर्जन कर रहे हैं, तो कृपया उसकी सूचना हमें भिजवाएँ, जिसे हम अपने अंक के माध्यम से अन्य विद्वानों तक पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे, जिससे समाज को यह ज्ञात हो सके कि किस कृति का सम्पादनकार्य कौन से विद्वान कर रहे हैं? इस तरह अन्य विद्वानों के श्रम व समय की बचत होगी और उसका उपयोग वे अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियों के सम्पादन में कर सकेंगे.

निवेदक

सम्पादक (श्रुतसागर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

डॉ. हेमन्तकुमार

पुस्तक नाम - श्रीपाल रास

कर्ता - श्री विनयविजयजी म. सा.

पूर्तिकर्ता - श्री यशोविजयजी म. सा.

संपादक - श्री प्रेमलभाई कापडिया

प्रकाशक - हर्षदराय प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई

प्रकाशन वर्ष - वि. सं. २०६७

भाग - ५

भाषा - मारुगूर्जर मूल, गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी विवेचन

विशेषता - चित्रों की प्रधानता से नवपदजी के माहात्म्य का विवेचन

समग्र जैन संघ में सुपरिचित नवपदजी माहात्म्य को प्रदर्शित करता श्रीपाल रास अपने निर्माण काल से ही जन-जन के लिये अति उपयोगी रहा है। पूज्य उपाध्याय श्रीविनयविजयजी एवं पूज्य महोपाध्याय श्री यशोविजयजी द्वारा लिखित इस सिद्धचक्र माहात्म्य काव्य में मयणासुंदरी एवं श्रीपाल राजा के व्यक्तित्व को विशेष रूप से प्रकाशित किया गया है। इस कथा के माध्यम से मुख्यरूप से मयणा के नारीत्व, सतीत्व, सत्व, ज्ञान, श्रद्धा, धैर्य, औदार्य आदि का वर्णन बड़े ही कुशलता पूर्वक किया गया है।

यह पवित्र कथा प्रत्येक वर्ष चैत्र एवं आश्विन मास के शाश्वत आयंबिल-ओली के दिनों में पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों द्वारा श्रीसंघों को सुनाई जाती है और श्रावक श्राविकाएँ भी बडे भाव से इसे पढते है। समग्र जैन संघ के लिए अति महत्त्वपूर्ण इस पावन ग्रंथ का परम दानवीर श्रीमान प्रेमलभाई कापडिया ने विक्रम संवत २०६७ में सर्वोत्कृष्ट व सर्वोपयोगी प्रकाशन किया है। गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी इन तीनों भाषाओं में ग्रंथ का प्रकाशन कर उन्होंने ऐसा सराहनीय प्रयास किया है कि संपूर्ण विश्व में कहीं भी रहने वाले साधर्मिक भाई-बहन इस ग्रंथ का पूरा-पूरा लाभ उठा सकें।

मारुगूर्जर भाषा में लिखित श्रीपाल रास की सभी गाथाओं को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करने हेतु उत्तमोत्तम प्राचीन सचित्र हस्तलिखित ग्रंथों का आधार लिया गया

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है। बहुमूल्य ऐतिहासिक सचित्र हस्तप्रतों के अतिसुंदर किनारियों से प्रत्येक गाथाओं को सुशोभित किया गया है। इस ग्रंथ में जैन चित्रकला का अद्वितीय संकलन किया गया है। वाचक वर्ग के लिए इस प्रकार की अनुठी कलाकृतियों का दर्शन भी दुर्लभ है। इस ग्रंथ के अवलोकन से यह पता चलता है कि जैन जगत के उत्कृष्ट, सुंदर एवं दुर्लभ चित्रकला को देशभर से एकत्र कर इस पावन ग्रंथ की शोभा में चार चाँद लगा दिया है। यह कार्य सोने में सुहागा जैसा ही है।

श्रीपाल रास में वर्णित प्रत्येक मुख्य प्रसंगों को विशेष रूप से नव चित्रित चित्रों में उतारकर हृदयंगम बनाने का प्रयास किया गया है। ग्रंथ में उद्धृत जयपुर मुगल शैली के चित्र अति सुंदर और उच्चस्तरीय हैं। संकलित उत्तम कलाकृतियाँ कथा प्रसंगों में प्राण का संचार करती हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ में वाचक वर्ग की जानकारी एवं सुविधा हेतु प्रत्येक विषय की प्रस्तुति योग्य रूप से की गई है। सर्वग्राह्य एवं बहुप्रचलित मूलपाठ को प्राचीन देवनागरी लिपि में ही प्रकाशित कर वाचकों को प्राचीन लिपि का दर्शन कराने का अनुपम उपकार किया है। मारुगूर्जर भाषा में लिखित टबार्थ को भी उसी रूप में प्रकाशित कर वाचकों के लिये अति उपयोगी बनाने का प्रयास किया गया है। पूर्वकालीन महात्माओं द्वारा लिखित शब्द प्रायः गूढार्थयुक्त, विविध नयसापेक्ष होते हैं, इसलिए उनके रचित ग्रंथों को समझने में उपयोगी विषयों का योग्यरूप से समायोजन किया गया है। मूल ग्रंथ से संबंधित आवश्यक सामग्री को परिशिष्ट में प्रकाशित करके इस प्रकाशन को और अधिक उपयोगी बनाया गया है।

पाँच भागों में प्रकाशित इस विशालकाय ग्रंथ में कुल ४०२ बहुमूल्य एवं हृदयंगम प्राचीनतापूर्ण रंगीन चित्रों का संकलन करके जैन चित्रकला का अजोड़ नमूना प्रस्तुत किया गया है। सभी चित्र कथा प्रसंगों से संबंधित एवं हृदय में आह्लाद उत्पन्न करने वाले हैं। इस प्रकाशन में जिस कागज का उपयोग किया गया है वह दीर्घायु है तथा छपाई भी बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक है।

श्रावकश्रेष्ठ माननीय श्री प्रेमलभाई कापडिया ने प्रस्तुत पावन ग्रंथ को उपयोगी सामग्री एवं चित्रों के साथ प्रकाशित कर जैनजगत गगन में एक देदीप्यमान नक्षत्र की भाँति प्रस्थापित कर दिया है। संपूर्ण जैन समाज को गौरवान्वित करने वाला यह प्रकाशन साधकों, संशोधकों, जिज्ञासुओं, ज्ञानियों, सामान्य वाचकों के लिये या यों

(अनुसंधान पृष्ठ-२७ पर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

जिनशासन के महान प्रभावक, राष्ट्रसंत परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में गांधीनगर - श्री शीतलनाथ जैन मंदिर सेक्टर-२४ में प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

गांधीनगर, सेक्टर-२४ - श्री शीतलनाथ जैन मंदिर के प्रांगण में दि. ११-३-२०२० को प्रातःकाल ७:३० बजे नूतन परमात्मा तथा राष्ट्रसंत पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा तथा सकल संघ के साथ बाजते-गाजते हर्षोल्लासपूर्वक धूमधाम से प्रवेश हुआ। इस शोभायात्रा में संघ के प्रमुख श्री दिनेशभाई कांतिलाल सहित अनेक श्रद्धालु शामिल थे। प्रवेश के पश्चात् राष्ट्रसंत पूज्यश्री का मांगलिक प्रवचन तथा गुरुपूजन का कार्यक्रम हुआ। पूज्यश्री की निश्रा में पंचधातु से निर्मित श्री आदिनाथ भगवान एवं रजत से निर्मित श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा तथा श्री सिद्धचक्र यंत्र का जिनालय प्रवेश व प्रतिष्ठा का विधान मंगल मंत्रोच्चारपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इन क्षणों में आचार्य श्री हेमचन्द्रसागरसूरिजी, गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी, परम पूज्य पं. श्री चन्द्रशेखरविजयजी महाराज साहब के शिष्य पंन्यास श्री यशकल्याण-विजयजी तथा योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरीश्वरजी महाराज साहब की समुदाय-वर्तिनी वरिष्ठ साध्वीवर्या श्री पुण्यप्रभाश्रीजी म. सा. आदि साध्वीजी भगवंत उपस्थित रहे। आचार्य श्री हेमचन्द्रसागरसूरिजी म.सा. की पावन प्रेरणा से मातुश्री विमलाबेन हीरालाल मेहता परिवार की ओर से श्री शांतिनाथ भगवान की प्रतिमा आराधना हेतु श्री संघ को अर्पित की गई। नूतन देवकुलिका के निर्माण का लाभ चन्द्राबेन नवीनचंद्र शाह की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री प्रणवभाई नवीनचन्द्र शाह को मिला।

श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा भराने का लाभ श्रीमती पुष्पाबेन चंपकभाई शाह, श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिमा भराने का लाभ श्रीमती सुरबालाबेन विनयचंद्र शाह तथा श्री सिद्धचक्र यंत्र भराने तथा प्रवेश का लाभ श्रीमती पूर्णिमाबेन आशुतोषभाई शाह तथा श्रीमती अलकाबेन हेमेन्द्रभाई शाह ने लिया। जिनालय में परमात्मा के समक्ष प्रतिष्ठाविधान के मंगल अनुष्ठान किए गए। तत्पश्चात् उपस्थित श्रीसंघ के लिए नवकारशी तथा विशेष संघपूजन का आयोजन भी किया गया। इस प्रसंग पर गांधीनगर, सेक्टर-२४ के मेयर श्रीमती लीलाबेन शुक्ला ने राष्ट्रसंत पूज्यश्री के आशीर्वाद ग्रहण किये। संघप्रमुख ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राष्ट्रसंत पूज्यश्री तथा पधारे हुए सभी साधु-साध्वीजी भगवंत की निश्रा मिली यह श्री संघ का अहोभाग्य है। इस पावन प्रतिष्ठा व मंगल पदार्पण से श्रीसंघ के ट्रस्टी, कारोबारी तथा संघ के सभी सदस्यों ने अहोभाव व्यक्त किया कि इस हेतु समस्त श्रीसंघ पूज्यश्री का सदा ऋणी रहेगा।

कोबा तीर्थ में राष्ट्रसंत पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में वर्धमानतप की ओली का पारणा एवं गुरु गौतमस्वामी महापूजन का भव्य आयोजन

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र में फाल्गुन कृष्णपक्ष ७ दि. १५ मार्च २०२० रविवार के दिन श्री वर्धमानतप की ओली के अनुमोदनार्थ गुरु गौतमस्वामी महापूजन का आयोजन किया गया। राष्ट्रसंत पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में तथा आचार्य श्री अमृतसागरसूरिजी, आचार्य श्री अरुणोदयसागरसूरिजी, आचार्य श्री हेमचन्द्रसागरसूरिजी व गणि श्री प्रशांतसागरजी म.सा. एवं विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद के पावन सान्निध्य में साध्वीवर्या श्री कल्परत्नाश्रीजी म. सा. की १५१वीं ओली और साध्वी श्री हर्षनंदिताश्रीजी म.सा. की ७५वीं ओली का तप-अनुमोदना सह पारणा का कार्यक्रम सानंद संपन्न हुआ। सुपात्रदानपूर्वक प्रसंग का लाभ साध्वीजी भगवंत के सांसारिक परिवार द्वारा लिया गया।

प्रातः ९:३० बजे तप की अनुमोदना के निमित्त गुरु गौतमस्वामी महापूजन का आयोजन श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र के परिसर में अवस्थित गुरुमंदिर में किया गया। आमंत्रित अतिथि तथा श्रद्धालु गुरुभक्त विशाल संख्या में उपस्थित थे। इस अवसर पर कोबा तीर्थ के ट्रस्टी तथा महुडी (मधुपुरी) तीर्थ के ट्रस्टी व सदस्य विशेष रूप से उपस्थित रहे।

राष्ट्रसंत पूज्यश्री ने साध्वीजी भगवंत के लंबे तप की अनुमोदना करते हुए कहा कि तप द्वारा कर्मो की निर्जरा होती है, यह परिवार पुण्यशाली है, माता-पिता ने बचपन से ही तप के संस्कार दिए हैं। आयंबिल का तप महामंगलकारी कहा गया है।

प्रवचन के बाद राष्ट्रसन्त पूज्यश्रीने सभी को मंगल आशीर्वाद प्रदान किए।

मातुश्री पानीबेन नागजीभाई मेघजीभाई गडा, हस्ते - महेन्द्रभाई गडा, चंदनबेन विशनजीभाई छेड़ा परिवार द्वारा पूजन में पधारे हुए अतिथियों तथा श्रद्धालुओं हेतु स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया।

❋ ♦ ❋

For Private and Personal Use Only

पूज्य राष्ट्रसन्त श्रीमद् पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में श्री कोबातीर्थ में आयोजित वर्धमानतप ओली के अवसर पर श्रीगौतमस्वामी महापूजन की झलकियाँ

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY). Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

घोडावच

नीम के पत्ते

फ्युमिगेशन चेम्बर

साँप की केंचुली

पाण्डुलिपि संरक्षण की पारंपरिक व अद्यतन पद्धति

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा

जि. गांधीनगर ३८२४२६

फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२

फेक्स (०७९) २३२७६२४९

Website : www.kobatirth.org

email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. And **Printed at :** NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and **Published at :** SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. **Editor :** HIREN KISHORBHAI DOSHI

For Private and Personal Use Only